CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चण्डीस्तवन

श्री दुर्गासप्तशती का हिन्दी पद्य रूपान्तर

रचयिता :
आचार्य धर्मानन्द जमलोकी
एम० ए० साहित्यरत्न

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
मुद्रक व प्रकाशक : फेमस प्रिन्टर्स, गणेश नगर,
तिलक नगर, नई दिल्ली-१८.

सर्वाधिकार : लेखक के अधीन सुरक्षित

प्रथम संस्करण : १००० प्रति

द्वितीय संस्करण : १००० प्रति

मूल्य : मां के चरणों में भक्ति, श्रद्धा और विश्वास

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रद्धेय श्री रमाकान्त शुक्ल जी
को सादर भेंट
[illegible]
14.5.89

चण्डीस्तवन

श्री दुर्गासप्तशती का हिन्दी पद्य रूपान्तर

रचयिता :
आचार्य धर्मानन्द जमलोकी
एम०ए० साहित्यरत्न

Devavani Parishad New Delhi

श्री कालीशिलापूजन

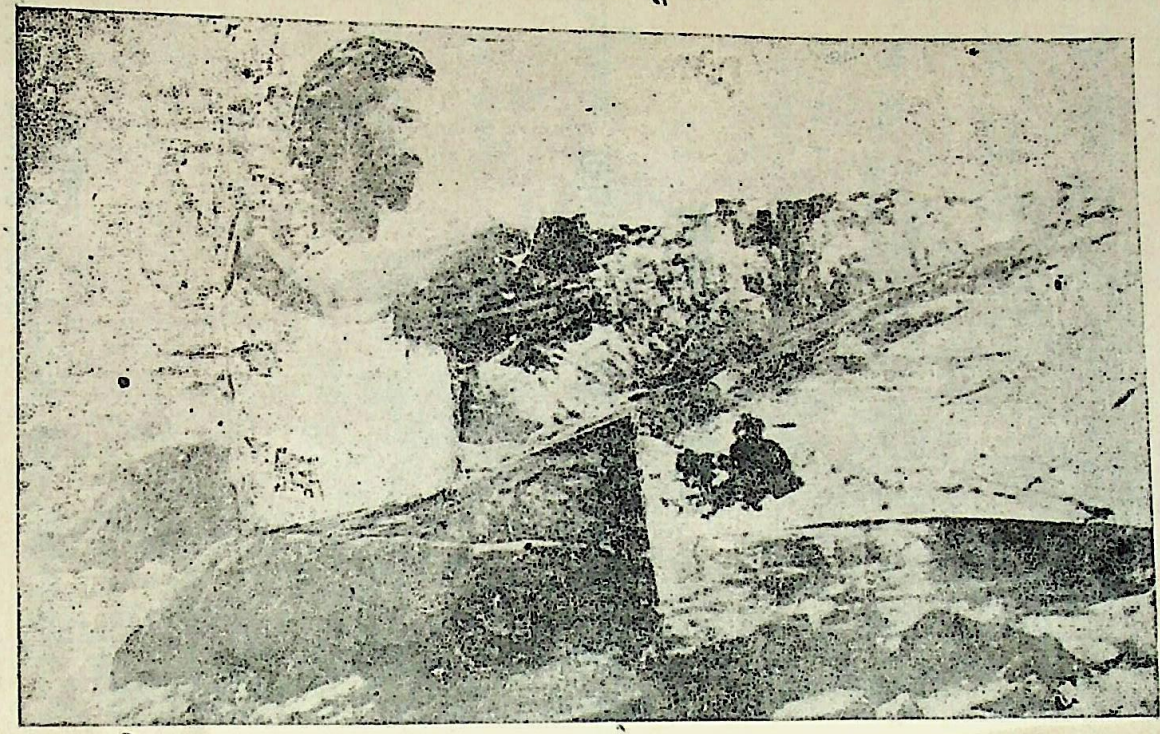

व्रती बाबा कालीमठ उत्तराखण्ड

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

समर्पण

उत्तराखण्ड हिमालय के प्रातःस्मरणीय तपस्वी

श्रीयुत व्रतीबाबा मु०पो० कालीमठ जि० चमोली, उ०प्र
के करकमलों में सादर समर्पित

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रचयिता

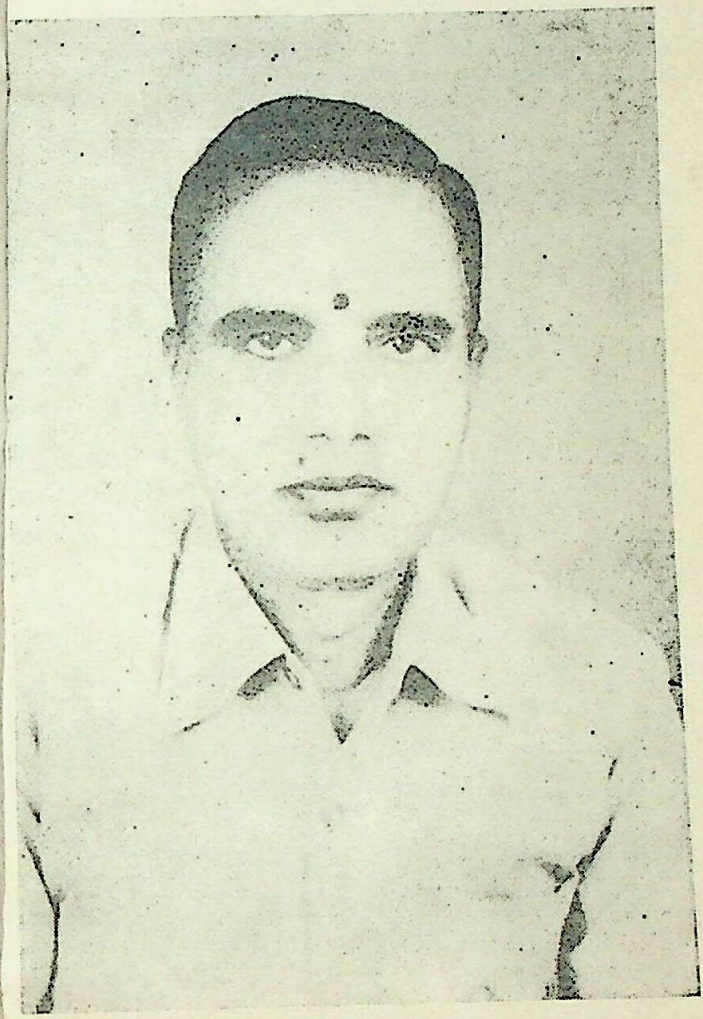

आचार्य धर्मानन्द जमलोकी

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्राक्कथन

NAGENDRA SINGH

International Court of Justice
Peace Palace, 2517 KJ The Hague Netherlands
Cable : Intercourt Thehague Telephone 224441 &
6, Akbar Road, New Delhi-110011
T. Nos. 373258 : 373187

हमारे आर्षग्रन्थों में श्रीमद्भगवद्गीता की ही तरह श्री दुर्गासप्तशती 'चण्डी' भी भारतीय धर्म, दर्शन एवं आध्यात्मिक चिन्तन का प्रतिनिधित्व करने वाली महर्षि वेदव्यास की उत्कृष्टतम कृति है। जिसका पाठ के रूप में प्रयुक्त होने वाली धार्मिक पुस्तकों में प्रमुख स्थान है। शाक्त सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार तंत्र, मंत्र एव यंत्रादि साधनों के बिना भी श्री दुर्गासप्त शती के पाठ मात्र से ही सन्तुष्ट होकर श्री भगवती दुर्गा भक्तजनों की सभी मनोकामनायें पूर्ण कर उन्हें अभीष्ट सिद्धि प्रदान कर देती हैं। किन्तु संस्कृत भाषा के पूर्ण ज्ञान के बिना चण्डी पाठ द्वारा श्री दुर्गा की आराधना अभी तक सर्वसाधारण जनों के लिये सुलभ और सम्भाव्य नहीं थी।

आचार्य धर्मानन्द जमलोकी श्री दुर्गासप्तशती के मर्मज्ञ मनीषी एवं उत्कृष्ट व्याख्याता हैं। उनका श्री दुर्गासप्तशती 'चण्डी' का पाठ आकाशवाणी से भी प्रसारित होता रहता है। आचार्य जमलोकी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में ललित एवं सुपाठ्य छन्द में श्री दुर्गासप्तशती का सरस और सुबोध्य पद्या-नुवाद करके प्रस्तुत पुस्तक 'चण्डीस्तवन' के द्वारा जनसाधारण के लिए भी चण्डी पाठ से श्री भगवती की पूजा आराधना का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

मैं उनके इस सराहनीय प्रयास के लिये हार्दिक धन्यवाद के साथ 'चन्डीस्तवन' के प्रचुर प्रचार प्रसार की कामना करता हूं।

हस्ता/०
डा० नागेन्द्र सिंह
न्यायाधीश अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

द्वितीयसंस्करण के अवसर पर

दो शब्द

चण्डीस्तवन के इस द्वितीय संस्करण को पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे हार्दिक सन्तोष एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस बीच मुझे अनेक प्रशंसात्मक सम्मतियां एवं पत्र प्राप्त होते रहे। कुछ लोगों ने मुद्रण की त्रुटियों के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया। इस संस्करण में मैंने मुद्रण की त्रुटियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया है। आशा है इस नवीन संस्करण से पाठकों को सन्तुष्टि मिलेगी।

इस अवसर पर आज बरबस ही अपनी प्रेरणा के आदिस्त्रोत, प्रतिभा एवं वैदुष्य के बेजोड़ धनी, कवि कर्ममर्मज्ञ पूज्यपाद स्वर्गीय अग्रज आचार्य श्रीधर जमलोकी जी की स्मृति से हृदय उद्वेलित हो रहा है। जिनकी चण्डीस्तवन को पढ़कर व्यक्त प्रतिक्रिया—धर्मानन्द ! इस कठिन साधना से निष्पन्न रचना के लिए तुम सचमुच बधाई के पात्र हो।" को सुनकर मैंने अपने परिश्रम को सार्थक समझा था। वरिवस्या आदि पत्रिकाओं में विद्वान समालोचकों द्वारा की गई चण्डीस्तवन की समीक्षा से भी श्रमसाफल्य एवं आत्मसन्तोष का अनुभव हुआ। मैं सभी समीक्षकों कृपालु पाठकों एवं भगवती के भक्तों का हृदय से आभारी हूं। जिन्होंने रचना को अपनाकर मुझे सच्चा प्यार एवं प्रोत्साहन प्रदान किया है।

वस्तुतः मुझ जैसे विक्षिप्तचेता व्यक्ति द्वारा चण्डीस्तवन की रचना, उसकी लोकप्रियता तथा प्रचार प्रसार यह सब पूज्यचरण व्रती बाबा जी की अहैतुकी कृपा एवं आशीर्वाद का ही फल है। जिसके लिए "त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेवसमर्पये" कहकर ही अपने को कृतकृत्य समझता हूं।

विनीत :

धर्मानन्द जमलोकी

बी–२–बी–९५, जनकपुरी, नई दिल्ली–५८

महाशिवरात्रिफा. कृ. चतुर्दशी २०४२ ८–३–८६

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भूमिका

आपत्तियों में ग्रस्त सुखेच्छु संसारी, विरक्त मोक्षार्थी और अभीष्ट सिद्धि को पाने के इच्छुक साधक सभी लोग शरणागत वत्सला दुर्गा की शरण में जाते हैं। और शाक्त संसार की सर्वमान्य पुस्तक दुर्गासप्तशती से जगदम्बा की उपासना करके अभीष्ट फल प्राप्त करते हैं। दुर्गासप्तशती (चन्डी) धार्मिक जगत में सर्वाधिक प्रयोग में आने वाली पाठ की पुस्तक है। इससे शायद ही कोई असहमत होगा। किन्तु अधिकांश पाठ करने वाले अर्थ को समझे बिना अशुद्ध उच्चारण के साथ पाठ करते हैं जिसे दोषपूर्ण ही माना जाता है।

अतः पाठकों को मूल सप्तशती का काव्यात्मक ज्ञान हो सके और संस्कृत में स्वयं पाठ न कर सकने वाले लोग भी इस चण्डी स्तोत्र से भगवती की आराधना कर सकें। इसी भावना से दुर्गा सप्तशती का यह रूपान्तर चण्डीस्तवन के नाम से आपके हाथों में सौंपा जा रहा है। वैसे अपनी आराध्या इष्टदेवी जगदम्बा के चरित्र का राष्ट्र भाषा में गुणानुवाद करना ही मेरा अभीष्ट एवं मूल प्रेरणा थी। चण्डी का अनुवाद करने मे मुझे कहां तक सफलता मिली है यह तो विद्वान लोग ही बता सकते हैं। किन्तु जहां तक मुझसे हो सका हैं, मैंने पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से मूलभावों को यथावत् अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है। नवार्णमंत्र और न्यासों का विशुद्ध मंत्ररूप होने के कारण अनुवाद सम्भव नहीं था। अतः उन्हें मूलरूप से संस्कृत में ही यथास्थान दिया गया है। कुछ लोग कह सकते हैं कि संस्कृत में ही श्री दुर्गासप्तशती के पाठ का माहात्म्य है। उनसे सहमत होते हुए भी मेरा नम्र निवेदन है कि अर्थबोध के बिना अशुद्ध उच्चारण के साथ किये संस्कृत पाठ की अपेक्षा संस्कृत न जानने वालों और अल्प-संस्कृतज्ञों को हरिगीतिका जैसे सुपाठ्य छन्द में निर्मित इस चण्डीस्तवन के पाठ से अधिक फल मिलेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। जो लोग

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

संस्कृत में पाठ कर सकते हैं। उन्हें संस्कृत में ही पाठ करना चाहिए। किन्तु आशा है कि राष्ट्र भाषा में किये गये काव्यानुवाद के रूप में वे भी इस चन्डीस्तवन का स्वागत करेंगे।

मनुष्य कितना ही सर्वज्ञ हो उससे त्रुटियों का होना असम्भव नहीं है। और मैं तो हू ही अल्पज्ञ। इस लिए चण्डी जैसी दुर्ज्ञेय पुस्तक को अनूदित करने में यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हों तो एतदर्थ मैं विद्वज्जनों से क्षमा प्रार्थी हूं। और आशा करता हूं कि वे उनसे मुझे अवगत करायेंगे। जिससे अग्रिम संस्करणों में उसको दूर किया जा सके। बहुत सावधानी बरतने पर भी पुस्तक में छपाई की कुछ त्रुटियां (मिस प्रिन्ट) रह गई हैं। उनके लिए मैं पाठकों से केवल क्षमायाचना ही कर सकता हूं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में मुझे जिन लोगों से किसी भी प्रकार का सहयोग मिला है। जगदम्बा से उनके अभ्युदय की प्रार्थना के साथ उन्हें हार्दिक धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

विनीत :

धर्मानन्द जमलोकी

बी–2–बी–95 जनकपुरी नई दिल्ली–58
मकर सक्रान्ति २०३९, १४ जनवरी १९८३

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री देवीकवच

श्रीयुत पितामह से कभी मार्कण्ड सुत मुनि ने कहा,
भगवन् कृपा करके मुझे कुछ ज्ञान उत्तम दीजिए ।
जो गुह्यतम इस लोक में अरु सर्वरक्षा कर सके,
जो नहिं किसी से भी कहा वह दास से कह दीजिए ॥

बोले पितामह गुह्यतम उपकार सबका जो करे,
देवी कवच अति पुण्यतम उसको सुनो तुम हे मुने ।
श्री शैलपुत्री है प्रथम अरु ब्रह्मचारिणि दूसरी,
है तीसरी श्री चण्द्रघण्टा चौथी महा कुष्माण्डिका ॥

है पंचमी श्री स्कन्दमाता षष्ठी कला कात्यायनी,
है सप्तमी श्री कालरात्री गौरी महा है अष्टमी ।
नवमी सदा श्री सिद्धिदा शास्त्रोक्त नवदुर्गा परा,
ये नाम ब्रह्मा ने स्वयं वेदत्रयी मुख से कहे ॥

जलते अनल की ज्वाल में अरु शत्रुओं के मध्य में,
दुर्गम विषमतम दुःख में आते शरण भय आर्त जो ।
होता नहीं उनका अशुभ रणसंकटों में भी कभी,
आपत्तियां नहिं देखते दुःख शोक भय होते नहीं ॥

जो भक्ति से सुमिरण करें उनकी सदा ही वृद्धि हो,
करते स्मरण देवेशि जो हो राखती उनको सदा ।
प्रेतासना चामुण्डिका वाराहिका महिषासना,
ऐरावतारूढा सुरेन्द्री, वैष्णवी गरुड़ासना ॥

माहेश्वरी वृषवाहना शिखिवाहिनी कौमारिका,
पद्मासना श्री पद्मजा कर पद्मधारिणि हरिप्रिया ।
श्वेताम्बरा अरु श्वेतरूपा ईश्वरी वृषवाहना,
हंसाधिरूढ़ा ब्रह्मशक्ती सर्वाभरण सम्भूषिता ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ये हैं सभी वे मातृकायें सर्व भोग समन्विता,
नानाभरणसम्भूषिता अरु विविध मणिगण सज्जिता ।
हैं दीखती रथसंस्थिता क्रोधाकुला ये देवियां,
श्री शंख चक्र गदा मुशल हल कुन्त प्रास प्रशोभिता ।।

खेटक परशु तोमर तथा श्री त्रिशूलादिक सज्जिता,
दैत्यदेहों के दलन को अरु भक्तरक्षा हेतु हैं ।
वे धारती निज आयुधों को देवहित के हेतु भी,
तुमको प्रणति हो रौद्ररूपे घोररूपपराक्रमे ।।

बलशालिनी उत्साहदे ! भयनाशिनी रणचण्डिके !,
रक्षा करो दुष्प्रेक्ष्य में हे शत्रु भय की वर्धिनी ।
प्राची दिशा ऐन्द्री रखे आग्नेय में यज्ञेश्वरी,
वाराहिका दक्षिण दिशा नैऋत्य में श्री खड्गिनी ।।

पश्चिम दिशा श्री वारुणी वायव्य में मृगवाहिनी,
उत्तरदिशा कौमारिका ईशान में श्री शूलिनी ।
ऊपर रखे श्रीब्रह्मशक्ती नीचे सदा श्री वैष्णवी,
इस भांति दस आशा रखे चामुण्डिका शववाहना ।।

आगे जया रक्षा करे विजया करे श्री पृष्ठ से,
बांयें करे अजिता सदा दांयें करे अपराजिता ।
उद्योतिनी चुटिया रखे मस्तिष्क को देवी उमा,
माथा रखे मालाधरी, भ्रूदेश को यशशालिनी ।।

भ्रूमध्य को राखे त्रिनेत्रा, नासिका यमघण्टिका,
श्री शंखिनी आंखे रखे अरु कान दोनो द्वारिणी ।
गाल दोनों कालिका अरु कर्णजड़ को शांकरी,
नासिका राखे सुगन्धा उर्ध्वोष्ट को श्री चर्चिका ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अधरोष्ठ को पीयूषिणी जिह्वाग्र राखे शारदा,
राखे कुमारी दाँत मेरे कण्ठ को श्री चण्डिका ।
श्री चित्रघण्टा घण्टिका को तालु को मायेश्वरी,
कामाक्षिका ठोढ़ी रखे वाणी सदा श्री मंगला ।।

ग्रीवा रखे श्री भद्रकाली रीढ़ को धनुधारिणी,
नीलग्रीवा कण्ठबाहर नलकूबरी नलिका रखे ।
कन्धे रखे श्री खड्गिनी अरु बज्रधारिणि बाहु दो,
हस्तद्वयों को दण्डिनी अरु उंगलियों को अम्बिका ।।

शूलेश्वरी राखे नखों को श्री कुलेश्वरि कोख को,
देवी महा राखे कुचों को शोक नाशिनि चित्त को ।
ललिता रखे मेरे हृदय को शूलधारिणि पेट को,
नाभिका को कामिनी, गुह्यांग को गुह्येश्वरी ।।

श्री पूतना अरु कामिका रक्षा करें मम लिंग की,
रक्षा करे महिषाधिरूढ़ा मेरे गुदा की सर्वदा ।
श्री भगवती कटि को रखे अरु विन्ध्यवासिनि जानु दो,
जाघें रखे दोनों सदा बलशालिनी श्री कामदा ।।

श्री नारसिंही घुट्टियों को, एड़ियों को तेजसी,
पादांगुली दस श्री रखे, तलवासिनी तनुवे रखे ।
दंष्ट्राकराली नाखुनों को उर्ध्वकेशिनि केश को,
रोमरन्ध्रों को कुबेरी राखे त्वचा वागीश्वरी ।।

रक्त मज्जा मांस मेदा हड्डी बसा को पार्वती,
अंतड़ियों को कालरात्री पित्त को मुकुटेश्वरी ।
पद्मावती सब कोश राखे, कफ को रखे चूड़ामणी,
ज्वालामुखी सब नाड़ियां राखे अभेद्या सन्धियां ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ब्रह्माणि राखे वीर्य को छाया रखे छत्रेश्वरी,
धर्मधारिणि मेरे अहं मन बुद्धि की रक्षा करे ।
प्राणादि पांचों वायुओं को, वज्रहस्ता मम रखे,
हो प्राणरक्षा कारिणी, कल्याणदायिनि शोभना ।।

रस रूप गन्धस्पर्श शब्दों को रखे श्री योगिनी,
नारायणी रक्षा करे मम सत्व रज तम की सदा ।
आयू रखे वाराहिका अरु धर्म राखे वैष्णवी,
यश कीर्ति लक्ष्मी धन तथा विद्या रखे श्री चक्रिणी ।।

इन्द्राणि राखे गोत्र को श्री चण्डिका पशुवंश को,
सन्तान को लक्ष्मी महा, भार्या रखे श्री भैरवी ।
सब पन्थ राखे सत्पथा क्षेमंकरी मम मार्ग को,
विजया महालक्ष्मी रखे नृपद्वार को जगव्यापिनी ।।

रक्षारहित जो स्थान हों वर्णित नहीं इस स्तोत्र में,
उनको सदा राखे जयन्ती पापनाशिनि अम्बिका ।
पग एक भी जावे नहीं जो चाहता हो शुभ निजी,
आवृत कवच से हो मनुज जाता जहां भी है सदा ।।

धनलाभ होता है तथा होती विजय श्री कामदा,
चिन्तन करे जिस वस्तु का वह प्राप्त होती सर्वथा ।
भू लोक में ऐश्वर्य अनुपम लब्ध होता सर्वदा,
होता कवच से है सुरक्षित मर्त्य निर्भय युद्ध में ।।

होती नहीं उसकी पराजय पूज्य वह त्रैलोक्य का,
देवी कवच अति पुण्यतम यह देवदुर्लभ स्तोत्र है ।
जो नित्य श्रद्धायुक्त हो सन्ध्यात्रयी में नर पढ़े,
दैवी कला को प्राप्त वह त्रैलोक्य में दुर्जेय हो ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सौ वर्ष तक जीवित रहे अपमृत्यु भागे दूर से,
चेचक तथा कुष्ठादि सब ही नष्ट होती व्याधियां ।
स्थावर तथा जंगम सहित कृत्रिम विषों से मुक्त हो,
सब भांति के अभिचार तांत्रिक मंत्र यंत्रादिक सभी ।।

भू चर तथा खेचर जलज उपदेश मात्रज देवता,
कुलदेवता मालासजन्मा डाकिनी अरु शाकिनी ।
घोरतर सब व्योमचारी बलशालिनी नभ डाकिनी,
ग्रह भूत यक्ष पिशाच राक्षस गन्धर्व आदिक योनियाँ ।।

वेताल भैरव ब्रह्मराक्षस कुष्माण्ड आदि कुयोनियाँ,
हैं दूर से ही भागते मन में कवच को जो रखे ।
सम्मान पाता राज्य से अरु तेज उन्नति वृद्धि भी,
बढ़ता सुयश से लोक में वह कीर्तिमण्डित हो सदा ।

जो नर कवच का पाठ करके पाठ चण्डी का करे,
जब तक रहे यह भू धरा स्थिर शैल कानन शोभिता ।
तब तक रहे नर की स्थिरा सब पुत्र पौत्री सम्पदा,
देहान्त में वह देवदुर्लभ दिव्य पद को प्राप्त हो ।।

माया परा की कृपा से, मानव परम पद प्राप्त हो,
शिवरूप से सायुज्य पा, है मोद पाता सर्वदा ।।

देवी कवच सम्पूर्ण

——

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री अर्गला स्तोत्र

मार्कण्ड सुत ज्ञानीप्रवर करने लगे फिर प्रार्थना,
इस अर्गला के स्तोत्र से जगदम्बिका की भक्ति से ।
काली जयन्ती मंगला हे भद्रकालि ! कपालिनी'
दुर्गा क्षमा धात्री शिवा स्वाहा स्वधा तुमको नमः ।
चामुण्डिके जय हो तुम्हारी भूतातिहारिणि अम्बिके !
सर्वत्रगे तेरी सदा जय, कालरात्रि तुम्हें नमः ।
मधुकैटभघ्ने हे विधाता वरदायिनी तुमको नमः,
मां रूप दो जय कीर्ति दो अरु शत्रुओं से मुक्ति दो ।।
महिषासुरघ्ने भक्त जन को सौख्यदायिनि अम्बिके,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।
हे रक्तबीज विनाशिके हे चण्डमुण्ड विदारिके !,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।।
हे शुम्भ निशुम्भ विमर्दिके ! हे धूम्रलोचन घातिके,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।
हे सर्ववन्दितपादपद्मे ! सौभाग्य सर्वप्रदायिके !
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।।
हे मां अचिन्त्यचरित्ररूपे ! सर्वशत्रु विनाशिके !
माँ रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।
निजभक्ति से नत सज्जनों को, पापनाशिनि चण्डिके,
मां रूप दो जय कीर्ति दो, खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।।
हे आधिव्याधि विनाशिके मां चण्डिके स्तुति जो करें,
माँ रूप जय यश दो उन्हें खल शत्रुओं से मुक्ति दो ।
जो नर निरन्तर भक्ति से मां अर्चना तेरी करें,
मां रूप जय यश दो उन्हें खल शत्रुओं से मुक्ति दो ;।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सौभाग्य दो आरोग्य दो, दो मां परमसुख दास को,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।
मां शत्रुओं का नाश करके आत्मबल अति उच्च दो,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।।

कल्याणदे कल्याण कर, सम्पत्ति दो उत्तम मुझे,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।
हे मां सुरासुर मुकुटमणिगण से निघृष्ट पदद्वये
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुभय से मुक्ति दो।।

मां भक्तजन तेरे यशस्वी श्रीयुत तथा विद्वान हों,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुभय से मुक्ति दो।
हे दैत्यदर्प विमर्दिके मां चन्डिके मुझ दास को,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुभय से मुक्ति दो।।

हे युगभुजे ! विधिसंस्तुते ! आनन्ददे ! परमेश्वरी,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुगण से त्राण दो।
हे मां निरन्तर कृष्ण से, सद् भक्तिपूर्वक प्रार्थिते,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुगण से त्राण दो।।

हे मां हिमाचलनन्दिनी के प्राणपति से संस्तुते !
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।
हे मां शचीप्रिय शक्र से सद्भावपूर्वक पूजिते !
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।।

भुजदण्ड मद में चूर्ण दानव, दर्प नाशिनि चण्डिके !
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।
निज भक्तजन आनन्द की, उद्दाम सीमा दायिनी,
मां रूप दो जय कीर्ति दो खल शत्रुओं से मुक्ति दो।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दो चित्त की अनुसारिणी मनहारिणी पत्नी मुझे,
संसार सागर तारिणी सद् वंश की मुक्तामणी ।
इस स्तोत्र को पढ़कर सुमति चण्डीस्तवन को जो पढ़े,
श्री सप्तशति के पाठ का फल प्राप्त करता सम्पदा ।।

अर्गला स्तोत्र सम्पूर्ण

———

"कीलक स्तोत्र"

विशुद्ध ज्ञान देह जो, त्रिवेदि दिव्य नेत्र हैं,
निमित्त श्रेयप्राप्ति के प्रणाम चन्द्रमौलि को ।।

करके प्रणति श्री शम्भु को मार्कण्डसुत कहने लगे,
जिज्ञासु जन जो शाक्त हैं वे जान ले अरु ठान लें ।
जो मंत्र साधक मार्ग में, खल विघ्नबाधक शाप हैं,
वे दूर होते ज्ञान से यदि मंत्र उत्कीलन करें ।।

यद्यपि सभी हैं सिद्धि दायक मंत्र जापक भक्त को,
चण्डीस्तवन अतिरिक्त भी, सिद्धि दायक वे सभी ।
उच्चाटनादिक कर्म होते सफल उनसे भी सदा,
फिर भी स्तवन यह सप्तशति से, दिव्य चिन्तारत्न है ।।

स्तुतिमात्र से सन्तुष्ट होकर सिद्धि देती अम्बिका,
मणि मंत्र औषध आदि साधन अनपेक्ष्य हैं इस स्तोत्र में ।
जप के बिना ही सिद्ध होती उच्चाटनादिक सब क्रिया,
हैं कार्य सब ही सिद्ध होते, लोक शंका शम्भु ने ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सब दूर करके सप्तशति की, श्रेष्ठता है पुष्ट की,
श्री चण्डिका का स्तोत्र यह श्री शम्भु द्वारा गुप्त है।
होती नहीं है पुण्य की इति यदि नियंत्रित रख सके,
कल्याण होते प्राप्त सब सन्देह इसमें कुछ नहीं ॥

कृष्णाचर्तुदशि को तथा शुक्लाष्टमी को स्वस्थ हो,
जन जो स्वयं को सौंप दे करती ग्रहण जगदम्बिका।
इस भांति से कीलित हुई ईशान से जो शक्ति है,
निष्कील कर उसको जपे, जो स्पष्ट स्वर से नित्य ही ॥

वह सिद्ध, गण, गन्धर्व बन, है मोद पाता सर्वदा,
सर्वत्र ही स्वच्छन्दता से घूमता निर्भीक हो।
अपमृत्युवश होता नहीं है मोक्ष पाता अन्त में,
जन जान कर आरम्भ करदे नाश होता अन्यथा ॥

सम्पन्न करते जानते ही विज्ञजन इसको सदा,
सौभाग्य आदिक दीखता जो नारियों में दिव्य है।
वह सब उसी जगदम्बिका की सत्कृपा से प्राप्त है,
श्री सप्तशति से अर्चना उसकी करें नित भक्ति से ॥

इस स्तोत्र को पढ़ते हुए सम्पत्ति उत्तम प्राप्त हो,
सम्पूर्णता की प्राप्ति भी अत एव नित चण्डी पढ़ें।
जिसकी कृपा ऐश्वर्य सुख, सौभाग्य सम्पद्दायिनी,
शत्रुनाशिनि मोक्षदा नर क्यों न उसकी स्तुति करें ॥

कीलकस्तोत्र सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

"श्री नवार्ण मंत्र विधि"

विनियोग–अस्य श्री नवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राः ऋषयः गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप्छन्दांसि, श्री महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता, नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तयः रक्त दन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्वानि, श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

अर्थ इस नवार्ण मंत्र के ब्रह्मा विष्णु और रुद्र ऋषि हैं । गायत्री उष्णिक् और अनुष्टुप् छन्द हैं । श्री महाकाली महालक्ष्मी, तथा महासरस्वती देवता हैं । नन्दा शाकम्भरी तथा भीमा शक्तियां हैं । रक्तदन्तिका दुर्गा और भ्रामरी बीज हैं । अग्नि वायु और सूर्य तत्व हैं । श्री महाकाली महालक्ष्मी तथा श्री महा सरस्वती की प्रसन्नता के लिए जप में विनियोग है ।

ऋषि आदि न्यास :–

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि, दाहिने हाथ से शिर का स्पर्श करें ।

गायत्री-उष्णिक्–अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे, हाथ से मुख का स्पर्श करें,

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, हाथ से हृदय का स्पर्श करें ।

ऐं बीजाय नमः गुह्ये हाथ से बांये स्तन का स्पर्श करें ।

ह्रीं शक्तये नमः नमः पादयोः, दोनों पैरो का स्पर्श करें ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्लीं कीलकाय नमः नाभौ, हाथ से नाभि का स्पर्श करें ।

इसके बाद ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मूलमंत्र से हाथों की शुद्धि करें ।

मूलषडङ्गन्यास—ॐ ऐं अगुष्टाभ्यां नमः । दोनों अंगूठों को मिलावें ।

ॐ ह्रींतर्जनीभ्यां नमः । दोनों तर्जनियों का स्पर्श करें ।

ॐक्लीं मध्यमाभ्यां नमः । बीच की दोनों उंगलियां मिलावें

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । दोनों अनामिका उंगलियों को मिलावें ।

ॐ विच्चे कनिष्ठकाभ्यां नमः । दोनों कनिष्ठिका ऊंगलियों को मिलावें ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । दोनों हथेलियों और पृष्ठभाग को स्पर्श करें ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ऐं हृदयाय नमः । हाथ से हृदय का स्पर्श करें !

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ! शिर का स्पर्श करें !

ॐ क्लीं शिखायै वषट् । शिखा का स्पर्श करें ।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । दोनों हाथों से कन्धों का स्पर्श करें ।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । दोनों आंखो और ललाट के मध्य का स्पर्श करें ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् । दाहिने हाथ से शिर पर से घुमाकर बांये हाथ पर फट् की आवाज करें ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बीजन्यास--निर्दिष्ट स्थानों पर हाथ से स्पर्श करें।

ॐ ऐं नमः शिखायाम्,

ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्लीं नमः बामनेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे, ॐ मुं नमः बामकर्णे,

ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् ॐ यैं नमः बामनासायाम्, ॐ विं नमः मुखे, ॐ च्चें नमः गुह्ये।

इसके बाद "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मूलमंत्र से आगे पीछे दाहिने बायें दो-२ बार सिर से पैर तक तथा पैर से सिर तक स्पर्श करें।

दिशान्यास--निर्दिष्ट दिशा में चुटकी बजायें--ॐ ऐं प्राच्यै नमः, ॐ ऐं आग्नेयै नम,

ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः, ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः ॐ क्लीं वायव्ये नमः।

ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः, ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, उर्ध्वायै नमः

ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यान-शिर खड्ग चक्र गदा परिघ धनु वाण शूल भुशुण्डिका
अरु शंख को कर में धरे सर्वांग भूषण सज्जिता।
नीलाश्मद्युति नेत्रत्रया दशपादमुख काली महा,
हरिसुप्ति पर विधि से स्तुता, मधुकैटभघ्नी को नमः॥
श्रो चक्र परशूधनु गदा, इषु पद्ममाला कुण्डिका
असि, चर्मपात्र सुराभरा, खर दण्ड घण्टा शूल को।
अरु पाश बज्र कमल करौं में धारती सस्मितमुखी,
कमलासना महिषार्दिनी लक्ष्मी महा को मैं भजूं॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

धनु शंख घण्टा हल मुशल अरु चक्र सायक शूल को,
हस्ताब्ज से धारण किये, घनमध्यशशिशीतलप्रभा ।
गौर्यंगजा नेत्रत्रया आधारभूता विश्व की,
शुम्भादि दैत्यविनाशिनी देवी सरस्वति को भजूं ।।

इस प्रकार ध्यान कर माला की प्रार्थना करें--
महामाये ! महामाले ! सर्वशक्ति स्वरूपिणी ।
चर्तुवर्ग प्रदा तू है सिद्धिदा मुझको बनो ।। ह्रीं सिद्धयै नमः इस मंत्र से माला को नमस्कार कर १०८ बार 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस नवार्ण मंत्र का जप करें ।

——

रात्रिसूक्त

विश्वेश्वरी जगधारिणी संसार स्थिति की कारिणी,
तेजः स्वरूपी विष्णु की निद्रा परा यों प्रार्थिता ।
स्वाहा स्वधा तुम ही बषट् स्वर हो विधाता ने कहा,
तुम ही सुधा तुम ही प्रणव में मात्रा त्रिधा हो संस्थिता ।।
तुम अर्धमात्रा विन्दुसंज्ञा नित्यरूपा बैखरी,
संध्या तुम्हीं सावित्रि हो, हो देवि जननी तुम परा ।
हो विश्वकी तुम धारिणी अरु सृष्टिकर्त्री भी तुम्हीं
पालन सदा करती तुम्हीं, हो नाश करती अन्त में ।।
उत्पत्ति में हो सृष्टिरूपा, पालन समय स्थिति रुपिणी,
संहृति स्वरूपा अन्त में जग की तुम्हीं हो जगमये ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

विद्या महा, माया महा, मेधा महा हो स्मृति महा,
मोहा महा, देवी महा, हे हे महेश्वरि हो तुम्हीं ।।
कालरात्री मोहरात्री रात्री महा हो दारुणा,
श्री ह्री तुम्हीं हो ईश्वरी तुम बोधरूपा बुद्धि हो ।
लज्जा क्षमा अरु शान्ति तुम ही तुष्टिरूपा पुष्टि हो,
हो खड्गिनी तुम शूलिनी, गदिनी तथा हो चक्रिणी ।।
हो शंखिनी अरु चापिनी, बाणादि आयुधधारिणी,
हो सौम्य से भी सौम्यतर, सुन्दर तरा हो सुन्दरी ।
पर अरु अपर से भी परे परतर तरा परमेश्वरी,
जो कुछ जगत में सत् असत् सब वस्तु हैं अखिलात्मिके ।।
उनकी तुम्हीं तो शक्ति हो संस्तुति करें कैसे कहो ?,
स्रष्टा तथा पालक विनाशक विश्व के जो विष्णु हैं ।
निद्राविवश उनको किया स्तुति कौन तेरी कर सके,
हरि को मुझे ईशान को तुम ही शरीर प्रदायिनी ।।
तो शक्ति किसकी विश्व में संस्तुति तुम्हारी कर सके,
हे मां उदारस्वभाविनी मधुकैटभों से त्रस्त हूं ।
दुर्धर्ष ये दोनों असुर इनको विमोहित तुम करो,
जगदीश को भी चेतना से पूर्ण कर दो चेतने !
दो बोध जिससे दानवों का शीघ्र वध वे कर सकें ।।

रात्रिसूक्त सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीसप्तशतीन्यास

विनियोग--ॐ अस्य श्री सप्तशती स्तोत्रमाला मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राः ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दाशाकम्भरी भीमाशक्तयः, रक्तदन्तादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायु सूर्यास्तत्वानि, ऋग्यजुःसामवेदाः ध्यानानि, मम सकल कामनासिद्धयर्थे श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

सप्तशतीन्यास–पूर्वोक्त रीति से अंगों का स्पर्श करें ।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शंखिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिधायुधा ।। अंगुष्टाभ्यां नमः ।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।। तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याँ च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ।। मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तैः रक्षास्मान् तथा भुवम् ।। अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।। कनिष्टकाभ्यां नमः ।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशि सर्वशक्तिसमन्विते ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भयेभ्यः त्राहि नो देवी दुर्गे देवि नमोस्तुते ।। करतलकर-पृष्ठाभ्याँ नमः ।

हृदयादिन्यास-- ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा.....हृदयाय नमः ।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि ..... शिरसे स्वाहा ।
ॐ प्राच्याँ रक्ष प्रतीच्यां च . शिखायै बषट् ।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि.. ...कवचाय हुम्
ॐ खड्गशूलगदादीनि.....नेत्रत्रयाय बौषट् ।
सर्वस्वरूपे सर्वेशि .....अस्त्राय फट्
ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ चं शिरसे स्वाहा, ॐ डिं शिखायै बषट् ।
ओं कां कवचाय हुम्, ॐ यैं नेत्रत्रयाय बौषट् । ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्राय फट् ।

दुर्गाध्यान

उद्दाम विद्युत सी प्रभा स्कन्धस्थिता मृगराज की,
करवाल खेटक धारिणी कन्यागणों से शोभिता ।
असि चक्र खेट गदा विशिख गुण चाप तर्जनि कर लिये
अनलात्मिका शशिधारिणी दुर्गा त्रिनेत्रा को भजूं ।।

इसके बाद मानस उपचार से (कल्पना द्वारा) भगवती की पूजा करके मध्यमस्वर से चण्डीस्तवन का पाठ करना चाहिए ।

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रथम चरित्र–प्रथम अध्याय

विनियोग – ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्रीछन्दः नन्दाशक्तिः, रक्तदन्तिकाबीजम्, अग्निस्तत्वम्, ऋग्वेदःस्वरूपम् श्री महाकाली प्रीत्यर्थे प्रथम चरित्रजपे विनियोगः ।

अर्थ---इस प्रथम चरित्र के ब्रह्मा ऋषि हैं, महाकाली देवता है, गायत्री छन्द है, नन्दा शक्ति है, रक्तदन्तिका बीज है, अग्नि तत्व है, ऋग्वेद स्वरूप है, श्री महाकाली की प्रीति के निमित्त प्रथम चरित्र के पाठ में विनियोग है ।

ध्यान

शिर खड्ग चक्र गदा परिध धनु वाण शूल भुशुण्डिका,
अरु शंख को कर में धरे सर्वांग भूषण भूषिता ।
नीलाश्मद्युति नेत्रत्रया, दशपादमुख काली महा,
हरिसुप्ति पर विधि से स्तुता मधुकैटभघ्नी को नमः ।।

"ऐं"–ज्ञानीप्रवर मार्कण्डसुत विख्यात शाक्त शिरोमणी,
कहने लगे श्री क्रौष्टुकी से ज्ञानचर्चा मग्न हो ।
श्री सूर्य सुत सार्वाणि जो अष्टम मनु प्रख्यात है,
विस्तार से उसकी कथा उत्पत्ति की कहता सुनो ।।
जगदम्बिका की कृपा से मन्वन्तराधिप ज्यों हुआ,
भास्करतनय सार्वाणि वह चर्चा वही विस्तृत सुनो ।
स्वारोचिषी मन्वन्त मेंथे चैत्रवंशी भूपती,
श्रीयुत सुरथ नामा हुये सम्राट सारे विश्व के ।।
पालन प्रजा का धर्मपूर्वक पितृसम करते हुए,
कोलाविनाशक क्षत्रियों से शत्रुता उनकी हुई ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सेना प्रबल थी भूप की भी युद्ध उनसे छिड़ गया,
अल्पसंख्यक शत्रुओं से, नृप था पराजित हो गया ।।

अपने नगर में लौट कर निज देश का स्वामी हुआ,
उसके प्रबलतम शत्रुओं ने आक्रान्त पुर को भी किया ।
मंत्री दुरात्मा थे सबल बलहीन नृप था हो गया,
विद्रोहियों से भूप का बल कोश सारा लुट गया ।।

आरूढ़ होकर अश्व में मृगया वहाने भूपती,
अधिकार से च्युत हो अकेले गहन बन में चल दिया ।
आश्रम वहां देखा नृपति ने द्विजवर्य मेधा का अहा,
शान्त श्वापदगण निषेवित मुनि शिष्य शोभित सर्वथा ।।

मुनिश्रेष्ठ से सत्कृत हुआ कुछ काल ठहरा नृप वहाँ,
करता भ्रमण चारों तरफ निज दुःख में विस्मृत हुआ ।
सोचा नृपति ने तब वहां ममता विमोहित चित्त से,
पालित हुआ जो पूर्वजों से हा पुर वही है खो गया ।।

दुर्वृत्त मेरे भृत्य क्या रक्षा करेंगे धर्म से ?
पुर की तथा गजराज जो था शूर मदवर्षी सदा ।
हा शत्रुओं के हाथ में वह कष्ट होगा पा रहा,
पा कर कृपा धन भोजनादिक जो सर्वदा अनुगत रहे ।।

वे भृत्य मेरे आज अनुचर शत्रुओं के हो गये,
जो कोश था संचित किया अतिकष्ट से मैंने अहा ।
करके अपव्यय आज उसका नाश होगा हो रहा,
इस भांति की बातें सदा राजा सुरथ था सोचता ।।

देखा नृपति ने एक सज्जन वैश्य को बन में वहां.
पूछा उसे हो कौन तुम, किस हेतु हो आए यहां ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्यों दीखते कुछ अनमने से, शोकाव्याकुल सौम्य हो ?
सुनकर वचन यह प्रेमपूरित नम्र होकर स्नेह से ।।
श्री वैश्य ने नृप से कहा श्रीमन् सुनो मेरी कथा,
अभिधान मेरा है समाधि श्रेष्ठिवंशी वैश्य हूं ।
धनलुब्ध दुष्ट स्वदारपुत्रों से निरादृत सेठ हूं,
धन पुत्र स्त्री से दूर हूं अब बन्धुजन से त्यक्त मैं ।।
घर से निकल कर आज बन में घूमता दुखग्रस्त हूं,
हैं वे कुशल भी या नहीं स्त्री पुत्र मेरे आज हा ।
उनकी कुशल बन में यहां कुछ भी मुझे मिलती नहीं,
हा पुत्र स्त्री हैं किस दशा में जानने को व्यग्र हूं ।।
घर पर सुखी हैं या नहीं दिनरात चिन्ताग्रस्त हूं,
दुवृत्त तो नहिं हो गये धन प्राप्त करके पुत्र वे ।
सुनकर वचन यह वैश्य के तब भूप ने उससे कहा,
धन लोभ में आकर जिन्होंने आपको है तज दिया ।।
मन आपका फिर क्यों उन्हीं की सोच में है डूबता ?
बोला बणिक् यह ठीक ही तो आप कहते सौम्य हैं ।
पर क्या करूं मन से उन्हें बिसरा न पाता सर्वथा,
हा जो पिता के प्रेम को भी लोभ में ठुकरा गये ।।
पति प्रेम को भी छोड़कर अपने पराये हैं हुए,
है मोह में मन ये उन्हीं के हाय कैसी वंचना ।
वश में नहीं मन सौम्य क्यों मैं भी स्वयं नहिं जानता,
हूं सांस लम्बी ले रहा, मन चैन सारा खो चुका ।।
उनके लिये संतप्त हूं जो भूल मुझको हैं गये,
पर क्या करूं यह मन निगोड़ा है न निष्ठुर हो रहा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सेना प्रबल थी भूप की भी युद्ध उनसे छिड़ गया,
अल्पसंख्यक शत्रुओं से, नृप था पराजित हो गया ।।

अपने नगर में लौट कर निज देश का स्वामी हुआ,
उसके प्रबलतम शत्रुओं ने आक्रान्त पुर को भी किया ।
मंत्री दुरात्मा थे सबल बलहीन नृप था हो गया,
विद्रोहियों से भूप का बल कोश सारा लुट गया ।।

आरूढ़ होकर अश्व में मृगया दहाने भूपती,
अधिकार से च्युत हो अकेले गहन बन में चल दिया ।
आश्रम वहां देखा नृपति ने द्विजवर्य मेधा का अहा,
शान्त श्वापदगण निषेवित मुनि शिष्य शोभित सर्वथा ।।

मुनिश्रेष्ठ से सत्कृत हुआ कुछ काल ठहरा नृप वहाँ,
करता भ्रमण चारों तरफ निज दुःख में विस्मृत हुआ ।
सोचा नृपति ने तब वहां ममता विमोहित चित्त से,
पालित हुआ जो पूर्वजों से हा पुर वही है खो गया ।।

दुर्वृत्त मेरे भृत्य क्या रक्षा करेंगे धर्म से ?
पुर की तथा गजराज जो था शूर मदवर्षी सदा ।
हा शत्रुओं के हाथ में वह कष्ट होगा पा रहा,
पा कर कृपा धन भोजनादिक जो सर्वदा अनुगत रहे ।।

वे भृत्य मेरे आज अनुचर शत्रुओं के हो गये,
जो कोश था संचित किया अतिकष्ट से मैंने अहा ।
करके अपव्यय आज उसका नाश होगा हो रहा,
इस भांति की बातें सदा राजा सुरथ था सोचता ।।

देखा नृपति ने एक सज्जन वैश्य को बन में वहां,
पूछा उसे हो कौन तुम, किस हेतु हो आए यहां ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्यों दीखते कुछ अनमने से, शोकाव्याकुल सौम्य हो ?
सुनकर वचन यह प्रेमपूरित नम्र होकर स्नेह से ।।
श्री वैश्य ने नृप से कहा श्रीमन् सुनो मेरी कथा,
अभिधान मेरा है समाधि श्रेष्ठिवंशी वैश्य हूं ।
धनलुब्ध दुष्ट स्वदारपुत्रों से निराहृत सेठ हूं,
धन पुत्र स्त्री से दूर हूं अब बन्धुजन से त्यक्त मैं ।।
घर से निकल कर आज बन में घूमता दुखग्रस्त हूं,
हैं वे कुशल भी या नहीं स्त्री पुत्र मेरे आज हा ।
उनकी कुशल बन में यहां कुछ भी मुझे मिलती नहीं,
हा पुत्र स्त्री हैं किस दशा में जानने को व्यग्र हूं ।।
घर पर सुखी हैं या नहीं दिनरात चिन्ताग्रस्त हूं,
दुवृत्त तो नहिं हो गये धन प्राप्त करके पुत्र वे ।
सुनकर वचन यह वैश्य के तब भूप ने उससे कहा,
धन लोभ में आकर जिन्होंने आपको है तज दिया ।।
मन आपका फिर क्यों उन्हीं की सोच में है डूबता ?
बोला बणिक् यह ठीक ही तो आप कहते सौम्य हैं ।
पर क्या करूं मन से उन्हें बिसरा न पाता सर्वथा,
हा जो पिता के प्रेम को भी लोभ में ठुकरा गये ।।
पति प्रेम को भी छोड़कर अपने पराये हैं हुए,
है मोह में मन ये उन्हीं के हाय कैसी वंचना ।
वश में नहीं मन सौम्य क्यों मैं भी स्वयं नहिं जानता,
हूं सांस लम्बी ले रहा, मन चैन सारा खो चुका ।।
उनके लिये संतप्त हूं जो भूल मुझको हैं गये,
पर क्या करूं यह मन निगोड़ा है न निष्ठुर हो रहा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

परिचय परस्पर प्राप्त कर समदुःख सुखी साथी बने,
आगे कथा मार्कण्डसुत इस भांति से कहने लगे ॥

मेधा मुनी के पास ब्रह्मन् पूर्णश्रद्धायुक्त हो,
सज्जन समाधी और पार्थिव नम्रतापूर्वक गये ।
करके प्रणाम अशीष पा दोनों सभा में स्थित हुए,
विश्रब्ध होकर वैश्यवर अरु भूप बातों में लगे ॥

नृप ने कहा भगवन् मुझे कुछ पूछना है आपसे,
निजमन नहीं वश में इसीसे दुःख पाता सर्वथा ।
बतलाइये मुझको कृपा कर क्यों व्यथा हूं पा रहा,
जो राज्य मुझ से खो गया अंगों सहित उसमें अभी ॥

क्यों मूर्खसम ममता बनी है जानकर भी हे मुने !
ये हैं तिरष्कृत पुत्र स्त्री से और उनसे त्यक्त हैं ।
अपमान पाकर भी निजों से उनमें अभी आसक्त हैं,
इस भांति हम दोनों मुने ! अत्यन्त दुःख से ग्रस्त हैं ॥

देख कर भी दोष मन ममता विमोहित हो रहा,
जानकर भी मोह क्यों यह ज्ञानियों को हो रहा ।
क्यों मूढ़ता अविवेकियों सी हो रही हमको मुने,
सुन भूप का यह प्रश्न सुन्दर विप्रवर कहने लगे ॥

राजन् विषय पथ का सभी हैं ज्ञान रखते विश्व में,
नाना विषय भी हैं पृथक् सबके लिए जग में बने ।
कोई दिवस का अन्ध है, है अन्ध कोई रात का,
कुछ जीव जग में रात दिन हैं एक सा ही देखते ॥

यह ठीक है नर को समझ है किन्तु उससे क्या हुआ,
क्यों कि ज्ञानी विश्व में पशु पक्षि मृग भी दीखते ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

है ज्ञान नर का भी वही जो अन्य प्राणी राखते,
है यह उन्हींकी सी समझ अरु अन्य बातें भी सभी ॥

होते हुए भी ज्ञान के ये पक्षि शावक चोंच में,
भूख व्याकुल भी स्वयं कण डालते हैं मोह से ।
मानुष मनुज व्याघ्रादि सब ही पुत्र मोहासक्त हैं,
देंगे कभी सुख ये हमें इस लोभ से वे ग्रस्त हैं ॥

ममता भ्रमर में हैं फंसे ये मोहगर्तों में गिरे,
संसार स्थिति की कारिणी माया इन्हें है मोहती ।
विस्मय करो मत भूपते श्री विष्णु की माया महा,
योगनिद्रा से विमोहित है विश्व सारा सर्वथा ॥

ज्ञानियों के चित्त को भी देवी महामाया वही,
करती बलात् मोहित सदा है खींच करके भगवती ।
ये सब चराचर सृष्टि उसकी दीखती है विश्व में,
होकर प्रसन्न वही मनुज को मुक्ति देती शास्वती ॥

वह ही परा विद्या सदा संसार बन्धन मोह की,
है हेतुभूता शास्वती वह ईश्वरों की ईश्वरी ।
पूछा नृपति ने विप्र को देवी कहो वे कौन हैं,
भगवन् महामाया जिन्हें हैं आप कहते ईश्वरी ॥

उत्पन्न वे कैसे हुई हैं कर्म उनके क्या मुने !
जो है प्रभाव स्वरूप उनका और उद्भव ज्यों हुआ ।
हे ब्रह्मविद्वर आपसे हूं चाहता सुनना उसे,
बोले मुनी राजन् सुनो वह नित्यरूपा शक्ति है ॥

उससे वितत है विश्व यह सब, व्याप्त सब मैं है वही,
फिर भी तुम्हें उत्पत्ति की मैं कुछ कथा कहता सुनो ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जब सुरगणों के कार्यहित अवतीर्ण होती विश्व में,
नित्या अजन्मा भी सजन्मा ख्यात होती है तभी ।।

संसार यह कल्पान्त में जलमग्न था जब सर्वथा,
श्री शेषशय्या सुप्त केशव योगनिद्रा लीन थे ।
हरिकर्ण मल से दो भयंकर दैत्य तब पैदा हुये,
कैटभ तथा मधु नाम के अति घोर जो विख्यात थे ।।

उद्यत हुए वे मारने को श्री प्रजापति को तभी,
हरिनाभिपद्मस्थित प्रजापति भीत उनसे हो गये ।
देखा जनार्दन सुप्त हैं अरु दुष्ट दानव उग्र हैं,
एकाग्र विधि ने योगनिद्रा का स्तवन तब यों किया ।।

हरि को जगाने हेतु हरि की नेत्रवासिनि संस्तुता,
विश्वेश्वरी जगधारिणी संसार स्थिति की कारिणी ।
अतुला प्रतापी विष्णु की निद्रा परा यों प्रार्थिता,
स्वाहा स्वधा तुम हो वषट् स्वर हो विधाता ने कहा ।।

तुम ही सुधा तुम ही प्रणव में मात्रा त्रिधा हो संस्थिता,
तुम अर्धमात्रा विन्दुसंज्ञा नित्यरूपा बैखरी ।
सन्ध्या तुम्हीं सावित्रि हो, हो देवि जननी तुम परा,
हो विश्व की तुम धारिणी अरु सृष्टिकर्त्री भी तुम्हीं ।।

पालन सदा करती तुम्हीं हो नाश करती अन्त में,
उत्पत्ति में हो सृष्टिरूपा पालन समय स्थिति रूपिणी ।
संहृति स्वरूपा अन्त में जग की तुम्हीं हो जगमये,
विद्या महा, माया महा, मेधा महा हो स्मृति महा ।।

मोहा महा देवी महा हे हे महेश्वरि हो तुम्हीं,
कालरात्री मोहरात्री रात्री महा हो दारुणा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री ह्री तुम्हीं हो ईश्वरी तुम बोधरूपा बुद्धि हो,
लज्जा क्षमा अरु शान्ति तुम ही तुष्टि रूपा पुष्टि हो ।।

हो खड्गिनी तुम शूलिनी गदिनी तथा हो चक्रिणी,
हो शंखिनी अरु चापिनी बाणादि आयुधधारिणी ।
हो सौम्य से भी सौम्यतर सुन्दरतरा हो सुन्दरी,
पर अरु अपर से भी परे परतरतरा परमेश्वरी ।।

जो कुछ जगत में सत् असत् सब वस्तु हैं अखिलात्मिके !
उनकी तुम्हीं तो शक्ति हो संस्तुति करूं कैसे कहो ।
स्रष्टा तथा पालक विनाशक विश्व के जो विष्णु हैं,
निद्राविवश उनको किया स्तुति कौन तेरी कर सके ।।

हरि को मुझे ईशान को तुम ही शरीर प्रदायिनी,
तो शक्ति किसकी विश्व में संस्तुति तुम्हारी कर सके ।
हे हे उदारस्वभाविके मधुकैटभों से त्रस्त हूं,
दुर्धर्ष ये दोनों असुर इनको विमोहित तुम करो ।।

जगदीश को भी चेतना से पूर्ण कर दो चेतने !
दो बोध जिससे दानवों का शीघ्र बध वे कर सकें ।
इस भांति देवी तामसी की ब्रह्मा स्तुती थे कर रहे,
श्री हरिप्रबोधन हेतु मधुकैटभ विनाशन के लिए ।।

हरि नेत्र मुख नासा भुजा दिल से तथा उरुदेश से,
निर्मुक्त हो दर्शन दिये अज को परा प्रत्यक्ष ने ।
सोकर उठे तब श्री जनार्दन योगनिद्रा मुक्त हो,
देखा उन्होंने जलमयी वह शेषशय्या छोड़के ।।

कैटभ तथा मधु दुष्ट दर्पी दैत्य दोनों थे खड़े,
रक्त आंखे क्रोध से कर ब्रह्महत्या को बढ़े ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उठकर किया तब युद्ध हरि ने उन दानवों से क्रुद्ध हो,
पंचास सौ वर्षों हुआ तब बाहुओं का युद्ध ही ॥

उन्मत्त थे बलवान वे मायाविमोहित हो गये,
कहने लगे केशव तुम्हारी वीरता से तुष्ट हम ।
वरदान देना चाहते हैं, चाह हो तो माँग लो,
बोले जगत्पति तुष्ट हो तो वध्य दोनों हूजिये ॥

वर है वरेण्य मुझे यही वर दूसरा नहिं चाहिए,
ऋषि ने कहा तब वंचितों ने जलमग्न सारे विश्व को ।
देखकर राजीवलोचन विष्णु से फिर यों कहा,
मारों हमें पृथ्वी जहां डूबी न हो जल में हरे ! ॥

मुनि ने कहा कह कर तथा वरचक्रधारी श्री हरी,
शंखी गदी ने चक्र से कर्तित जघन पर शिर किये ।
इस भांति विधि से संस्तुता हो व्यक्त जग में वह हुई,
सुनलो प्रभाव तुम्हें उसीका मैं सुनाता हूं पुनः ॥

ऐं प्रथम अध्याय तथा प्रथम चरित्र सम्पूर्ण ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मध्यम चरित्र

दूसरा अध्याय

विनियोग :-- अस्य श्री मध्यममचरित्रस्य विष्णुऋषिः महालक्ष्मीदेवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरीशक्तिः दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्वम् यजुर्वेदः स्वरूपम्, महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगः, ।

अर्थ :-- इस मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि, हैं महालक्ष्मी देवता हैं, उष्णिक् छन्द है, शाकम्भरी शक्ति है, दुर्गा बीज है, वायु तत्वहै, यजुर्वेद स्वरूप है, श्री महालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए मध्यम चरित्र के पाठ में विनियोग है ।

ध्यान

श्री चक्र परशू धनु गदा इषु पद्ममाला कुण्डिका,
असि चर्मपात्र सुरा भरा, खर दण्ड घण्टा शूल को ।
अरु पाश ब्रज्र कमल करों में धारती सस्मित मुखी,
कमलासना महिषार्दिनी लक्ष्मी महा को मैं भजूं ।।

द्वितीय अध्याय

"ह्रीं" मुनि श्रेष्ठ मेधा ने कहा राजन् पुरातन है कथा,
देवासुरों में सौ बरस से घोर रण था हो रहा ।
दैत्यनायक था महिष अरु देवनायक इन्द्र थे,
उस युद्ध में सुर सैन्य को दैत्येश ने मर्दित किया ।।

माहिष असुर सब सुरगणों को जीत इन्द्र स्वयं बना,
होकर पराजित देवगण नेतृत्व में विधि के सभी ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पहुंचे वहां बैठे जहां श्रीपति तथा ईशान थे,
अपने पराजय की व्यथा माहिष पराक्रम की तथा ।।

विस्तार से उनसे कही तब देवगण ने वह कथा,
सूर्य अग्नी इन्द्र वायू वरुण यम अरु चन्द्रमा ।
अधिकार सबके छीन कर वह है अधिष्ठित हो गया,
हैं स्वर्ग से उसके निकाले, देवगण भूलोक में ।।

मर्त्यों सदृश ही घूमते, हा दैत्य से पीड़ित हुए,
दुष्कर्म माहिष दैत्य के हम आपसे हैं कह चुके ।
आये शरण में आपकी वधयुक्ति उसकी कीजिए,
सुनकर बचन तब देवगण के हरि हर महा क्रोधित हुये ।।

भ्रुकुटी तनी मुख थे कुटिल अरु लाल लोचन हो गये,
चक्री हरी के क्रुद्ध मुख से तेज निकला तब वहां ।
शंकर तथा विधि के मुखों से भी विनिर्गत हो गया,
शक्रादि सब ही सुरगुणों का तेज निःसृत था हुआ ।।

होकर इकत्रित तेज वह अति दिव्य अद्भुत था अहा,
जाज्वल्यमान नगेश सा वह तेजपुंज महान था ।
देखा सुरों ने सब दिशायें तेजज्वाला व्याप्त हैं,
सर्वदेवशरीर जन्मा उपमा रहित वह तेज था ।।

परिणत हुआ तब दिव्यनारी देह में वह तेज ही,
हा कान्ति से तब जगमगाने लोक तीनों थे लगे ।
श्री शम्भु के शुभ तेज से अतिभव्य मुख था बन गया,
यमतेज से मूर्धज बने, भुजदण्ड हरि के तेज से ।।

चान्द्री प्रभा कुचद्वय बनी, ऐन्द्री बनी कटिमध्य थी,
ऊरू तथा जंघा वरुण से भू से नितम्बद्वय बने ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

थे पद बने विधि तेज से अरु उंगलियां रवितेज से,
हस्तांगुली वसुतेज से कौबेर से नासा बनी ।।

थी पांत दांतों की बनी श्रीयुत प्रजापति तेज से,
नयनत्रयी पैदा हुई अतिदिव्य पावक तेज से ।
संन्ध्याद्वयी से भ्रू बनी अरु कर्ण मारुत तेज से,
अन्यान्य सुरगण तेज से निर्मित हुई साक्षात् शिवा ।।

सब देवगण की तेजराशी से विनिर्मित तब उसे,
हर्षित हुए दानवदलित अति देवतागण देख के ।
निजशूल उद्धृत शूल को सादर पिनाकी ने दिया,
था चक्र चक्री ने दिया निजचक्र से निःसृत हुआ ।।

वर शंख पाशी ने दिया श्री अग्नि ने निज शक्ति दी,
तूणीर बाणों से भरा अरु चाप मारुत ने दिया ।
अमरेश ने निज बज्रनिर्गत बज्र प्रस्तुत कर दिया,
ऐरावती घंटा मधुर सादर सुराधिप ने दिया ।

दण्ड यम ने कालनामा अरु पाश पाशी ने दिया,
माला प्रजापति ने तथा विधि ने कमण्डलु था दिया ।
सब रोमकूपों को दिवाकर रश्मियों से भर गया,
काल ने दी ढाल निर्मल निज खड्ग भी प्रस्तुत किया ।।

अजर अम्बर हार निर्मल क्षीरजलनिधि ने दिये,
कुण्डल कड़े चूड़ामणी अरु शुभ्र आधा चांद भी ।
केयूर सुन्दर बाजुओं के, विमल नूपुर पैर के,
हंसुली अनुत्तम अरु अंगूठी उंगलियों के हेतु दी ।।

श्री विश्वकर्मा ने दिया अति दिव्य फरसा भेंट में,
साथ में थे अस्त्र बहुविध कवचादि दुर्भिद लौह के ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अम्लान पंकज मालिका शिर के तथा उर के लिए,
कर के लिए सुन्दर कमल सादर जलधि ने था दिया ।।
अति दिव्य वाहन केशरी अरु रत्न हिमगिरि ने दिये,
मधुपूर्णपात्र धनेश ने उत्फुल्ल होकरके दिया ।
श्री शेष ने नागेश जो धारक धरा के ख्यात हैं,
बहुमूल्य मणियों से विभूषित नागहार उसे दिया ।।
अन्यान्य सारे सुरगणों की अस्त्र भूषण भेंट से,
सम्मानिता वह साट्टहासा गर्जना करने लगी ।
घोरतर उस नाद से तब गगन गुंजित हो उठा,
हलचल हुई प्रतिशब्द से सब लोक चंचल हो गये ।।
कांपे समुद्र निनाद वह अतिशय भयंकर घोर था,
वसुधा हिली, पर्वत हिले डुलने लगी सारी धरा ।
जयसिंहवाहिनि ! देवगण तब जोर से कहने लगे,
होकर विनम्र सुभक्ति पूर्वक स्तवन मुनि करने लगे ।।
संक्षुब्ध देख त्रिलोक को तब दैत्यगण सेना सजा,
हथियार लेकर हाथ में सन्नद्ध होकर उठ पड़े ।
है क्या हुआ ? कहने लगा दानव महिष अति क्रुद्ध हो,
ले सैन्य अपनी साथ वह शब्दानुसारी बढ़ चला ।।
देवी दनुज ने दिव्य देखी त्रैलोक्यव्यापी थी प्रभा,
पगभार से नत थी धरा रेखा मुकुट की व्योमगा ।
पाताल सातों क्षुब्ध थे देवी धनुष टंकार से,
व्याप्त कर सारी दिशायें थी भुज सहस्त्रों से खड़ी ।।
था दैत्यगण का शक्ति से तब रण भयानक छिड़ गया,
शस्त्रास्त्र से चारों दिशायें जगमगाने लग गई ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
सेनापती चिक्षुर असुर था दैत्यसेना का बना,
लड़ने लगा चामर असुर चतुरंग सेना साथ ले ॥

ले षट् अयुत रथ साथ में दानव उदग्र बढ़ा वहां,
ले करोड़ रथी भटों को हनु दैत्य था लड़ने लगा ।
सेना पचास करोड़ ले असिलोम दानव डट गया,
वाष्कल दनुज पहुंचा वहां निज लाख षष्ठी सैन्य ले ।

गज अश्व लेकर के अनेकों परिवारितासुर आगया,
रथ कोटि लेकर था लड़ा वह दैत्य दुर्मद युद्ध में ।
पहुंचा विडाल अयुत रथों की दिव्य सेना साथ ले,
लड़ने लगा रथियों सहित लाखों जमा थे जो वहां ॥

रथ नाग घोड़ों से घिरे थे दैत्य लाखों अन्य भी,
जगदम्बिका से लड़ रहे रण था भयानक हो रहा ।
आवृत करोड़ों रथ गजों से, अरु बाजियों से था स्वयं,
दानव महिष रण भूमि में रण घोरतर करने लगा ॥

तोमर परशु पट्टिश मुशल अरु खड्ग शक्ती आदि से,
थे भिन्दिपालों से लड़े वे दैत्य आयुध तीव्र थे ।
फेंका किसी ने शक्ति को था पाश फेंका अन्य ने,
तलवार लेकर मारने को दैत्य कुछ आगे बढ़े ॥

शस्त्रास्त्र सारे दानवों के शस्त्रवर्षा से निजी,
लीला सहित काटे सभी श्री चण्डिका ने क्रुद्ध हो ।
श्रमचिन्ह थे मुख पर नहीं लख देवगण हर्षित हुए,
वह दैत्यदेहों पर भयंकर बाण थी बरसा रही ॥

केशर हिलाता क्रुद्ध हो वह देविवाहन केशरी,
रिपुसैन्य में दावा अनल सम वेग से था बढ़ रहा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

लड़ते हुए निःश्वास जो श्री देवि के निःसृत हुए,
जन्मे सहस्त्रों गण उन्हीं से थे राक्षसों से भिड़ गये ।।

परशु पट्टिश खड्ग आदिक शस्त्र ले लड़ते हुए,
दानव दलन करने लगे थे देविप्रेरित गण सभी ।
थे शंख भेरी को बजाते युद्ध में उन्मत्त वे,
उत्कट त्रिशूल गदादि से खर शक्तिवर्षा से तथा ।।

खड्ग द्वारा सैंकड़ों को मृत्यु मुंह में डालते,
घण्टास्वनों से विमोहित दानव कई मरने लगे ।
बांधे घसीटे रस्सियों से भूमि पर दानव कई,
दो टूक दुश्मन हो रहे थे मार से तलवार की ।।

भीषण गदा की चोट से दानव अनेकों सो गये,
खून की उल्टी हुई जब मार मुशलों की थी पड़ी ।
शूल से छाती विन्धीं रिपु भूमिपर गिरने लगे,
शरसंघ से छलनी हुई टूटी कमर मरने लगे ।।

बाजानुकारी देवपीड़क प्राण थे खोने लगे,
बांहें कटी, ग्रीवा कटी, कटियां कटी शिर भी कटे ।
जंघा किसी की थी कटी सब थे लुढ़कते भूमि में,
एकबाहू अक्षि पादी श्री देवि ने काटे कई ।।

थे शिर कटे भी फिर उठे वे देवि से लड़ने लगे,
धारण किये आयुध विविध थे कवन्ध भिड़े हुए ।
थे बाद्य तालों पर अनेकों नाच भी करने लगे,
शिरहीन भी लड़ने लगे थे खड्ग शक्ती ऋष्टि से ।।

रथनाग घोड़ों से अनेकों दानवों की लाश से,
पाटित हुई रण की धरा दुर्गम्य थी सारी हुई ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

शोणित प्रवाही घोर नदियां रणभूमि में बहने लगी,
हाथी असुर अरु बाजियों की रक्तधार सहस्त्र से ॥
कुछ ही क्षणों में दानवों की सैन्य का मर्दन हुआ,
तृणदारुचय का वन्हिसम ही अम्बिका ने क्षय किया ।
केशर हिलाता नाद करता घोरतर अति केशरी,
चुन चुन रहा था प्राण मानो दैत्यदेहों से वहां ॥
देवीगणों ने दानवों से युद्ध जो अद्भुत किया,
सन्तुष्ट नभ से पुष्पवर्षा देवगण करने लगे ॥

द्वितीय अध्याय सम्पूर्ण

तीसरा अध्याय

ध्यान

उगते हजारों भास्करों सी क्रान्ति की रक्ताम्बरा,
शिरमालिका रक्तस्तनी, विद्या अभीती जपवटी ।
वर हस्तकमलों में लिए नेत्रत्रयी शोभित मुखी,
चन्द्रार्धरत्न मुकुट सजी कमलासना को मैं भजूं ॥
मेधा मुनी कहने लगे राजा सुरथ अरु वैश्य से,
मरते हुए निज सैन्य को तब देख दानव क्रुद्ध हो ।
सेनापती चिक्षुर असुर रण देवि से करने लगा,
वर्षा शरों की कर रहा था युद्ध में इस भांति वो ॥
जैसे जलद निज वारि हो गिरि मेरु पर बरसा रहा,
तब छिन्न कर शर दैत्य के लीलासहित श्री चण्डि ने ।,

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मारा असुर का सारथी घोड़ों सहित वह गिर पड़ा,
काटा धनुष भी शीघ्र ही रथ की पताका काट दी ।।
तब छिन्नधन्वा दैत्य का तन बिद्ध बाणों से किया,
कोदण्ड खण्डित, सारथी मृत, भग्नरथ हो दैत्यने ।
धावा किया उस देवि पर कर ढाल अरु तलवार ले,
तलवार तीखी धार की तब सिंह शिर पर मार दी ।।
बांयीं भुजा पर देवि के भी वेगपूर्वक वार दी,
टूटी भुजा के स्पर्श से राजन् स्वयं तलवार ही ।
हो रक्तलोचन क्रोध से कर शूल लेकर रिपु बढ़ा,
भद्रकाली पर दनुज ने फिर शूल फेंका वेग से ।।
गिरते हुए रविबिम्ब से निजतेज से जलते हुए,
हा देख आते शूल को तब देवि ने निज शूल से ।
टुकड़े किये सौ शूल के चिक्षुर निहतरण में हुआ,
सेनापती माहिष असुर का था ढेर भू पर हो गया ।।
आगे बढ़ा चामर असुर आरूढ़ गज पर था हुआ,
जो शक्ति छोड़ी दैत्य ने वह अम्बिका हुंकार से ।
निष्प्रभ हुई भू पर गिरी यह देख विस्मित दैत्य था,
अतिक्रुद्ध हो उस दैत्य ने निजशूल फेंका वेग से ।।
रणचण्डि ने खण्डित किया निजबाण वर्षा से उसे,
छल्लांग से था जो अभी रिपुहस्तिमस्तक पर चढ़ा ।
भुजयुद्ध रिपु से कर रहा था देविवाहन केसरी,
लड़ते हुए तब वे वहां गजमुक्त भू पर गिर पड़े ।।
दारुण प्रहारों से निरन्तर क्रुद्ध हो लड़ने लगे,
फिर वेग से आकाश में छल्लांग लेकर सिंह ने ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रिपु पर झपट कर शीघ्र ही शिरहीन उसको कर दिया,
पेड़ पत्थर मार से ही रण में उदग्र सुला दिया ।

दांत मुक्कों थप्पड़ों से हत था कराल मरा वहां,
क्रुद्ध देवी ने गदा से था चूर्ण उद्धत को किया ।
वाष्कल मरा रण में वहां खल भिन्दपालाविद्ध हो,
ताम्रक तथा अन्धक असुर शर मार से थे सो गये ।।

लेकर त्रिशूल त्रिनेत्रधारिणि ईश्वरी ने शीघ्र ही,
मारा हनू उग्रास्य एवं उग्रबल को युद्ध में ।
तलवार से मार्जार का शिर था किया धड़ से पृथक्,
दुर्धर तथा दुर्मुख गये यमलोक में शरविद्ध हो ।।

संहार होते सैन्य का निज देख माहिष दैत्य ने,
था रूप भैंसे का किया देवीगणों के त्रास को ।
थूथनों से ही किसी को खुरक्षेप से गण अन्य को,
लांगूल से लेटे अनेकों दीर्ण सींगों से किये ।।

निज वेग से अरु नाद से चक्कर लगा करके कई,
निश्वासवायू से गणों को था धराशायी किया ।
करके गणों को ध्वस्त दानव सिंह से लड़ने लगा,
अतिक्रुद्ध थी जगदम्बिका माहिष असुर दुर्धर्ष था ।।

था क्रोध में उन्मत्त हो वह खोदता खुर से धरा,
श्रृंगाग्र से गिरिगण गिरा गर्जन असुर करने लगा ।
खुरक्षुण होती चक्करों से दीर्ण वसुधा हो गई,
लांगूल से आहत जलधि भी भूमि को था ढा रहा ।।

हिलते विषाणों से घनों के खण्ड थे नभ में हुए,
श्वासानिलों से गिरि अनेकों व्योम से गिरने लगे ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जब क्रोध से दानव बढ़ा वह चण्डिका की घात में,
वधहेतु उसके अम्बिका तब क्रोध विह्वल हो उठी ।।
बांधा असुर को पाश से फिर क्रुद्ध होकर युद्ध में,
तब छोड़ माहिष देह को वह सिंह भीषण बन गया ।
शिरच्छेद को ज्यों ही बढ़ी नररूप में वह आ गया,
खर खड्ग लेकर हाथ में फिर वेग से लड़ने लगा ।।
तब बाण वर्षा कर भयंकर चण्डिका ने शीघ्र ही,
बीन्धा असुर को ढाल अरु तलवार भी खण्डित हुई ।
होकर महागज सूंड से तब देविवाहन सिंह को,
था खींचने दानव लगा वह घोरगर्जन मग्न हो ।।
तलवार से तब चण्डिका ने सूंड उसकी काट दी,
धारण किया माहिष तनू फिर दैत्य ने सहसा वहां ।
त्रैलोक्य को क्षोभित किया सारा चराचर त्रस्त था,
तब क्रुद्ध होकर अम्बिका मधुपान थी करने लगी ।।
हंसने लगी पीती हुई तब रक्तनयना चण्डिका,
बलवीर्य मद उद्धत असुर गर्जन बहुत करने लगा ।
निजशृंग से ही चण्डिका पर था भूधरों को ढा रहा,
शरसंघ से खण्डित किये रणचण्डि ने भूधर सभी ।।
कम्पित स्वरा मदघूर्णिता, वह दैत्य से कहने लगी,
गर्जन करो क्षण मूढ़ तुम मैं पी रही जब तक सुरा ।
हूं मारती तुमको अभी तब सुर करेंगे गर्जना,
कह कर शिवा उस पर चढ़ी ऋषि ने कही आगे कथा ।।
निजशूल गल पर चण्डिका ने पैर से उसको दबा,
मारी, दबा पदभार से मुखमार्ग से निःसृत हुआ ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ज्यों ही असुर नवदेह में स्तम्भित शिवा ने कर दिया,
फिर अर्धनिःसृत मात्र ही लड़ने लगा माहिष अहा ॥
लेकर महा असि चण्डिका ने छिन्न शिर उसका किया,
हा हा मरे कहते हुए भागे असुर जो थे बचे ।
सुरगण सभी हर्षित हुए ऋषिजन हुए आश्वस्त थे,
मिलकर स्तवों से चण्डिका गुणगान वे करने लगे ।
गन्धर्व गायनमग्न थे, थी अप्सरायें नाचती ॥

तृतीय अध्याय सम्पूर्ण

चतुर्थ अध्याय

ध्यान

काले घनों सी सुप्रभा भ्रूभंग से रिपु भीतिदा,
चन्द्रार्ध शोभित मूर्धजा, कर शंख चक्र कृपाण को ।
त्रैशूल को धारण किये, मृगराज की स्कन्धस्थिता,
देवी त्रिनेत्रा तेज से त्रैलोक्य को पूरित किये ॥
निजकामना संसिद्धि को सुरवृन्द से सम्पूजिता,
हूं ध्यान करता मैं उसी दुर्गा जयाख्या देवि का ॥
ऋषि ने कहा इन्द्रादि सुर सेना सहित मृत देख के,
अतिशय बली उस दैत्य को श्री चण्डिका के हाथ से ।
हर्षपुलकित देह से गर्दन झुका नतस्कन्ध हो,
तब भक्तिपूर्वक प्रार्थना इस भांति से करने लगे ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जिसने किया सारा जगत निजशक्ति से यह व्याप्त है,
राशीकृता सब सुरगणों की शक्ति जिसकी मूर्ति है ।
देवों तथा मुनिवर्ग की उस पूजनीया अम्बिका,
को भक्ति से करते प्रणति वह हित हमारा नित करे ।।

महिमा अतुल जिसकी अहो, बल की नहीं उपमा कहीं,
श्री शेष ब्रह्मा शम्भु भी वर्णन न जिसका कर सकें ।
वह चण्डिका चिन्तन करे खल दुष्ट भय के नाश का,
पालन करे जग का सदा सब भांति से जगदम्बिका ।।

तुम पुण्यकर्मा सज्जनों के गेह में लक्ष्मी बनी,
पापियों के घर गरीबी सद्बुद्धि हो कृतबुद्धि की ।
श्रद्धा तुम्हीं हो सज्जनों की लज्जा कुलीनों की तुम्हीं,
तुमको प्रणति है अम्बिके जग का सदा पालन करो ।।

अविचिन्त्य मोहक रूप का किस भाँति हम वर्णन करें,
दैत्यनाशक अतुल बल का हे देवि क्या शंसन करें ।
रणभूमि में अद्भुत तुम्हारे देव दानव मध्य में,
जो थे चरित उनकी करें किस भांति से चर्चा शुभे ।।

हो हेतु तुम ही विश्व की त्रैगुण्य तुम में लीन हैं,
पर दोषमुक्ते । पार हरि हर आदि भी पाते नहीं ।
सर्वाश्रये ! तब अंश से उद्भूत सारा विश्व है,
अव्याकृता परमा प्रकृति तुम आदिभूता शक्ति हो ।।

स्वाहा तुम्हीं देवी सदा सब सुरगणों की तृप्ति हो,
उच्चार से सारे मखों में, पितृगण की भी तुम्हीं ।
तृप्तिदायिनि शक्ति हो श्राद्धादिकों में हे शुभे,
कहते सभी तुमको स्वधा इस हेतु हैं जन विश्व में ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अविचिन्त्यव्रतशीले तुम्हीं हो हेतुभूता मुक्ति की,
अभ्यास तेरा ही करें इन्द्रियजयी सारे मुनी ।
जन दोषगण से मुक्त जो, तत्वार्थ को हैं जानते,
वे मुक्ति की आशा लिए विद्ये ! तुम्हीं को पूजते ।।

आधार हो ऋग्वेद की यजु की तुम्हीं शब्दात्मिके,
उद्गीथ सुन्दर गेय पदयुत, साम की भी स्थिति तुम्हीं ।
वेदत्रयी हो भगवती भवभावनी वार्ता तुम्हीं,
सारे जगत की जीविका तुम आर्तिनाशिनि शक्ति हो ।।

मेधा तुम्हीं सब शास्त्र की सारज्ञान प्रदायिनी,
दुर्गे तुम्हीं भवदुर्गसागर पार कारिणि नाव हो ।
अधिदेवता हृद्देश की कैटभरिपू हरि की तुम्हीं,
गौरी तुम्हीं पाती प्रतिष्ठा चन्द्रशेखर शम्भु से ।।

परिपूर्ण शशि के बिम्ब सम सस्मित विमल आभा लिए,
कमनीय कांचन कान्तिसम मुख देख कर भी आपका ।
क्रोधित महिष उद्यत हुआ सहसा समर के हेतु हा,
आश्चर्य है हमको शिवे अद्भुत हृदय वह दैत्य था ।।

भ्रुकुटी कुटिल अतिशय कुपित अरु रक्तरंजित छवि अहो,
उगते हुए शशि के सरिस मुख देख कर भी आपका ।
आश्चर्य माहिष दैत्य ने जो प्राण निज त्यागे नहीं,
हैं कौन जीते ? देख के क्रोधित हुए यमराज को ।।

देवि प्रसन्न सदा रहो जग का भला जिससे बने,
मां हेतु कितने ही कुलों के नाश का तव क्रोध है ।
मालूम है ये हो चुका इस युद्ध में हमको सभी,
सेना विपुल माहिष दनुज की नष्ट होती देख के ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सम्मान पाते देश में मिलता सदा धन यश उन्हें,
धर्मच्युती होती नहीं, सुतदार रहते स्वस्थ हैं ।
हे अभ्युदय की दायिके हैं धन्य वे इस लोक में,
होकर प्रसन्न जिन्हें तुम्हारी प्राप्त होती सत्कृपा ।।

होती शरण्ये सौख्यदा जिस पर कृपा है आपकी,
सत्कर्म करता धर्म पूर्वक़ आदर सहित वह नर सदा ।
निजकर्मफल के पुण्य से है स्वर्ग पाता सर्वथा,
लोकत्रयों में आप हैं फलदायिनी जगदम्बिके ।।

दुर्गे ! स्मरण से प्राणियों की भीति हरती आप हैं,
सद्बुद्धि हो देती उन्हें जो स्वस्थ हो चिन्तन करें ।
दारिद्रय दुख भयनाशिनी तेरे सिवा है कौन सी,
उपकार को सबके सदा करुणाद्र जिसका चित्त हो ।।

इन दानवों की मृत्यु से, आनन्द होगा विश्व को,
नरकदायक पाप यद्यपि, ये हैं सदा करते रहे ।
कर वीरगति को प्राप्त ये भी स्वर्गगामी हों सभी,
ये सोच कर ही आप रण में शत्रुओं को मारती ।।

देख कर ही दानवों को भस्म क्यों करती नहीं,
शस्त्र उन पर व्यर्थ ही क्यों फेंकती तुम हो शिवे ।
हों शस्त्र से पावित सभी, ये लोक उत्तम पा सकें,
निजशत्रुओं पर भी कृपा इस भांति हो करती शुभे ।।

खड्गप्रभा की दीप्ति से अरु कान्ति से शूलाग्र की,
चौंधिया कर भी न क्यों, हा नेत्र निष्प्रभ हैं हुए ।
खल दानवों के देवि ! हम तो बस यही हैं सोचते,
शीतांशु मण्डित चन्द्रमुख, थे वे तुम्हारा देखते ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दुर्वृत्त वृत्तों का शमन ही देवि तेरा शील है,
अविचिन्त्य तेरा रूप है जिसकी कहीं तुलना नहीं ।
है बल तुम्हारा देवविजयी, दैत्यनाशक अम्बिके,
तुम शत्रुओं पर भी कृपा, हो व्यक्त करती चण्डिके ।।

उपमा करें किससे अहो तेरे पराक्रम दिव्य की,
शत्रुभयप्रद भव्यमोहक रूप है अन्यत कहां ।
मन में कृपा रण में निठुरता त्रैलोक्य में देखी नहीं,
केवल तुम्हीं में दीखती वरदायिनी जगदम्बिके ।।

नाश करके शत्रुओं का त्रैलोक्य को रक्षित किया,
रणभूमि में मारे असुर भी स्वर्ग भेजे हैं सभी ।
उन्मत्त रिपु से त्रस्त थे भयहीन है हमको किया,
करते प्रणति तुमको शिवे सब देव बारम्बार है ।।

रक्षा करो निजशूल से अरु खड्ग से भी अम्बिके,
राखो सदा घंटास्वनों से अरु चाप की टंकार से ।
प्राची प्रतीची में रखो दक्षिण दिशा में चण्डिके,
करके भ्रमण निजशूल का उत्तर दिशा रक्षित करो ।।

त्रैलोक्य में हैं घूमते जो रूप तेरे सौम्य ये,
अरु घोरतर उनसे हमें जग के सहित रक्षित करो ।
निज खड्ग शूल गदादि जो करपल्लवों में सोहते,
उनसे हमारी सर्वदा रक्षा करो जगदम्बिके ।।

ऋषि ने कहा करके स्तवन जगमात का पूजन किया,
तब नन्दनोद्भव कुसुम कुंकुम गन्ध लेपन धूप से ।
भक्तिपूर्वक देवगण ने श्री चण्डिका अर्चन किया,
बोली प्रणत सुरवृन्द को वरदायिनी जगदम्बिका ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हे देवगण जिस वस्तु की हो, चाहे मुझ से आपको,
मांगो उसे क्या दूं तुम्हें वरदान देना चाहती ।
बोले अमर इच्छा हमारी पूर्ण है सब हो चुकी,
जो शत्रु मारा युद्ध में दुर्धर्ष माहिष आपने ।।

हो चाहती देना अगर फिर भी हमें वर तो शिवे,
जब जब स्मरण तेरा करें तब आपदों से मुक्ति दो ।
जो नर करें कमलानने! तेरा स्तवन इस स्तोत्र से,
मां वित्त वैभव दो उन्हें धन दार सम्पद् वृद्धि दो ।।

रहना प्रसन्न सदा शिवे हम पर कृपा होती रहे,
ऋषि ने कहा इस भांति से सुरवृन्द से प्रार्थित हुई ।
अपने तथा जग के लिए श्री भद्रकाली भगवती,
कह कर 'तथास्तु' उसी समय अन्तर्हिता राजन् हुई ।।

इस भांति थी पैदा हुई त्रैलोक्य की हितकामिनी,
सब सुरगणों की देह से ये है सुनी तुमने कथा ।
उत्पन्न गौरी देह से फिर देवगण उपकारिणी,
दुष्ट शुम्भ निशुम्भ के वध हेतु ज्यों पैदा हुई,
सुनलो कथा राजन् वही कहता जगत हित कारिणी ।।

'ह्रीं' मध्यम चरित्र एवं चतुर्थ अध्याय सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उत्तमचरित्र

पंचम अध्याय

विनियोग——अस्य श्री उत्तमचरित्रस्य रुद्रऋषिः, महा सरस्वती देवता अनुष्टुप् छन्दः भीमाशक्तिः, भ्रामरी बीजं, सूर्यस्तत्वम्, सामदेवः स्वरूपम् श्री महासरस्वती प्रीत्यर्थे उत्तमचरित्र जपे विनियोगः ।

अर्थ——इस उत्तम चरित्र के रुद्रऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं । अनुष्टुप् छन्द है, भीमाशक्ति है, भ्रामरी बीज है, सूर्यतत्व है, सामवेद स्वरूप है; श्री महासरस्वती की प्रसन्नता के लिए उत्तमचरित्र के पाठ में विनियोग है ।

ध्यान

धनुशंख घण्टा हल मुशल अरु चक्र सायक शूल को,
करपद्म से धारण किये धनमध्य शशि शीतल प्रभा ।
गौर्यंगजा नेत्रत्रया आधारभूता विश्व की,
शुम्भादि दैत्य विनाशिनी देवी सरस्वति को भजूं ।।

'क्लीं' ऋषि ने कहा हे भूपते प्राचीन युग की है कथा;
दैत्य शुम्भ निशुम्भ नामक दो सहोदर भ्रात थे ।
त्रैलोक्य का शासन उन्होंने वीर्यमद में चूर्ण हो,
था शक्र से छीना तथा मखभाग भोगी बन गये ।।

अधिकार भास्कर के तथा चन्द्रमा के भी सभी,
थे भोगते यम के वरुण के यक्षेश के भी वे स्वयं ।
वे कार्य पावक अरु पवन का भी स्वयं करने लगे,
उनसे पराजित हो तिरस्कृत राज्यच्युत थे देवता ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

निकले हुए वे स्वर्ग से अधिकार खोकर के सभी,
देवी परा अपराजिता, का संस्मरण करने लगे ।
वर था हमें उसने दिया आपत्तियों में संस्मृता,
मैं आपकी तत्क्षण करूंगी दूर सारी आपदा ।।

यह सोच करके देवगण हिमवन्त पर्वत पर गये,
जाकर वहां श्री विष्णुमाया की संस्तुती करने लगे ।
वे दैत्यपीडित देवता सब भक्ति से कहने लगे,
देवी महादेवी शिवे ! करते सतत तुमको नमः ।।

होकर प्रणत करते नियत भद्रे ! प्रकृति हम हैं नमः,
रौद्रे प्रणति नित्ये तुम्हें हे गौरि धात्रिस्वरूपिणी ।
ज्योत्स्ने सुखे इन्दुस्वरूपे करते सतत तुमको नमः
शरणागतों की वृद्धि दे हे सिद्धिदे करते नमः ।।

हे राजलक्ष्मी नैऋते शर्वाणि तुमको है नमः,
हे सर्वकारिणि दुर्गतारिणि सारभूते ख्यातिके ।
कृष्णे तथा धूम्रे तुम्हें दुर्गे सदा करते नमः,
अतिसौम्य रौद्रस्वरूपिणी जगदम्बिके तुमको नमः ।।

आधारभूता विश्व की कृति देवी को करते नमः
जो है प्रतिष्ठा विश्व की उस शक्ति को करते नमः ।
सब प्राणियों में विष्णुमाया रूप से जो ख्यात है,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

सब प्राणियों में चेतना के रूप में जो व्याप्त है,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
सब प्राणियों में बुद्धिरूपा जो सर्वदा है संस्थिता,
हम बार–२ विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सब प्राणियों में नींदरूपा जो सर्वदा है संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो भूख बन कर संस्थिता सब प्राणियों में सर्वदा,
हम बार–बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

जो नित्य छाया रूप में सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो शक्ति भूता संस्थिता है प्राणियों में सर्वदा,
हम बार बार विनम्र हो करते प्रणाम उसे सदा ।।

तृष्णास्वरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो क्षान्तिरूपा सर्वदा है प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो करते प्रणाम उसे सदा ।।

जो जातिरूपा संस्थिता सब प्राणियों में सर्वदा,
हम बार-बार ~~कस्ते~~ विनम्र हो करते प्रणाम उसे सदा ।
लज्जा स्वरूपा सर्वदा जो प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

जो शान्तिरूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
श्रद्धास्वरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

जो कान्तिरूपा सर्वदा है प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो करते प्रणाम उसे सदा ।
लक्ष्मी स्वरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो करते प्रणाम उसे सदा ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो वृत्तिरूपा सर्वदा है प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
स्मृतिरूप से जो सर्वदा है प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
देवी दया के रूप में जो प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
है तुष्टिरूपा सर्वदा जो प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
जो मातृरूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो भ्रान्तिरूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
अधिदेवता जो इन्द्रियों की प्राणिगण में संस्थिता,
जो भूतगण में व्याप्त है करते प्रणाम उसे सदा ।
चिति रूप से सारे जगत को व्याप्त कर जो संस्थिता,
हम बार-बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
पहले अभीप्सित प्राप्त कर जो देवगण से संस्तुता,
सुरराज से लम्बे समय तक सेविता जो भगवती ।
कल्याण की है हेतु जो कल्याणदा परमेश्वरी,
हर के हमारी आपदा मंगल करे वह सर्वदा ।।

हम देवगण जिसका स्तवन हैं भक्ति से नत कर रहे,
हैं दुष्ट दैत्यों से निपीड़ित याद जिसको कर रहे ।
देवी शिवा वह संस्मृता सुरवृन्द से अब शीघ्र ही,
आपत्तियों को दूर कर सब भांति से रक्षा करे ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ऋषि ने कहा इस भांति जब सुर प्रार्थना में लीन थे,
आई तभी श्री पार्वती मन्दाकिनी के स्नान को ।
पूछा सुरों से सुभ्रुवा ने करते स्तवन किसका कहो,
बोली शिवा होकर प्रकट तब पार्वती तनकोश से ।।

मेरा स्तवन हैं कर रहे ये शुम्भ पीड़ित देवता,
होकर पराजित युद्ध में ये दुष्ट दैत्य निशुम्भ से ।
पैदा हुई तन कोश से श्री पार्वती के वह शिवा,
श्री कौशिकी के नाम से इस हेतु ही विख्यात है ।

तब कौशिकी के निष्क्रमण से पार्वती काली हुई,
इस हेतु ही हिमधाम में विख्यात कालीपीठ है ।
देखा वहां श्री अम्बिका को दिव्य मोहक रुप में,
तब भृत्य शुम्भ निशुम्भ के खल चण्ड ने अरु मुण्ड ने ।।

बोले असुर वे शुम्भ से अतिसुन्दरी मनहारिणी,
हिमवन्त को निजकान्ति से है जगजमाती जो अहा ।
देखा किसी ने क्या कभी होगा अहो सौन्दर्य वो,
मालूम कर उसका पता दैत्येश अपना लीजिये ।।

जगमग दिशायें कर रही तनकान्ति से स्त्रीरत्न जो,
है सुन्दरी नगराज पर दैत्येन्द्र उसको देखिये ।
जो रत्न मणिगज अश्व आदिक विश्व में विख्यात हैं,
घर की बढ़ाते आज शोभा आपही के वे सभी ।।

गजराज ऐरावत तथा उच्चैःश्रवा वरबाजि जो,
तरु पारिजात सभी लिए सुरराज से हैं आपने ।
यह रत्नभूत विमान भी जो था विधाता का कभी,
शोभा बढ़ाता आज है अब आपके आंगन धरा ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

छीनी धनेश्वर से निधी यह है महापद्मा यहाँ,
स्वर्णवर्षी यह वरुण का है छत्र घर में आपके ।
किंजल्किनी माला जलधि अम्लान पंकज दे गया,
था जो प्रजापति का कभी रथ आज है वो आपका ॥

दैत्येश छीनी आपने उत्क्रान्त शक्ती मृत्यु की,
पाश वारुण जलधि उद्भव रत्न जो भी दिव्य हैं ।
वे आज सब ही राजते भ्राता निशुम्भ अधीन हैं,
श्री अग्नि ने भी आपको है पूत वस्त्रद्वय दिया ॥

इस भांति जितने रत्न हैं सब आप ही के पास हैं,
स्त्रीरत्न इस कल्याणिनी को प्राप्त क्यों करते नहीं ।
ऋषि ने कहा सुनकर वचन चण्ड मुण्ड स्वभृत्य के,
सुग्रीव को भेजा वहां पर दूत दानव शुम्भ ने ॥

इस ढंग से कहना उसे सुग्रीव मेरी ओर से,
जिस भांति वो आये यहां करना वही तुम युक्ति से ।
जाकर वहां नगप्रान्त में बैठी जहां थी अम्बिका,
वाणी मधुर कोमल वचन वह दूत यों कहने लगा ॥

त्रैलोक्यस्वामी शुम्भ जो हे देवि ! दानवराज हैं,
भेजा उन्हीं का दूत हूं मैं पास आया आपके ।
आज्ञा सदा उनकी सभी हैं देवतागण मानते,
उस देवविजयी शुम्भ के सन्देश को सुनिये शुभे ॥

त्रैलोक्यस्वामी हूं शुभे ! हैं देवता वश में सभी,
सब यज्ञभाग पृथक् पृथक् हूं भोगता मैं ही शुभे ।
अधिकार में मेरे सभी वररत्न हैं त्रैलोक्य के,
गजरत्न वाहन इन्द्र का है छीन कर मैंने लिया ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्षीरोदमन्थन से मिला हयरत्न जो उच्चैःश्रवा,
होकर प्रणत सुरवृन्द ने मुझको समर्पित है किया।
गन्धर्व नाग सुरादिकों के पास जो भी रत्न थे,
वे रत्न सब ही आज हैं इस दास के वश में शुभे ॥

स्त्रीरत्नरूपा आपको हैं विश्व में हम मानते,
हम रत्नभोगी हैं प्रिये ! आकर यहां हमसे मिलो।
मेरी बनो या विक्रमी निःशुम्भ की प्यारी बनो,
क्यों कि तुम भी रत्न हो चंचलकटाक्षे ! सोचलो ॥

करके वरण मेरा, अतुल एश्वर्य की भागी बनो,
पत्नी बनो मेरी प्रिये करके विचार सुबुद्धि से।
ऋषि ने कहा सुन ये वचन जगधारिणी दुर्गा शुभा,
गम्भीर मन, सस्मितमुखी, कहने लगी भद्रा परा ॥

हो कह रहे तुम सत्य ही है झूठ इसमें कुछ नहीं,
त्रैलोक्यस्वामी शुम्भ है और दैत्य निशुम्भ भी।
पर जो प्रतिज्ञा कर चुकी झूठी करूं कैसे उसे,
हूं कर चुकी जो मैं प्रतीज्ञा अल्पमतिवश वह सुनो ॥

संग्राम में जीते मुझे जो दर्प मेरा हर सके,
मुझसा बली संसार में होगा वही मेरा पती।
तो शुम्भ और निशुम्भ भी आकर यहां मुझसे लड़ें,
अरु जीत करके शीघ्र से पाणिग्रहण मेरा करें ॥

वह दूत बोला दर्पिणी ऐसा कहो मुझसे नहीं,
त्रैलोक्य में है कोन जो कर सामना उनका सके।
मिल कर सभी जब देवता भी दानवों के सामने,
रण में कभी टिकते नहीं फिर स्त्री अकेली क्या टिके ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सम्मुख कभी जिनके कहो इन्द्रादि भी टिकते नहीं,
शुम्भादि का अबले ! अहो तुम क्या करोगी सामना ।
मेरे कथन से ही चलो तुम पास दानवराज के,
आकृष्ट केशों से हुई जाना पड़ेगा अन्यथा ॥
बोली शिवा यह ठीक है, हैं दैत्य दोनों ही बली,
पर क्या करूं प्रण का जिसे सोचे बिना ही कर चुकी ।
जो कुछ कहा मैंने कहो सादर सभी दैत्येन्द्र से,
जाकर, उचित जो कुछ लगे उसको करें वे शीघ्र ही ॥

पंचम अध्याय सम्पूर्ण

छठा अध्याय

ध्यान

नागासना फणिफणसजी उरुदेश में रत्नावली,
रविसम प्रभा है देह की नेत्रत्रयी से भासिता ।
माला कपाल कमल घड़ा कर धारिणी शशि शेखरा,
सर्वज्ञ भैरव अंकगा पद्मावती को मैं भजूं ॥
ऋषि ने कहा देवी वचन सुन दूत था क्रोधित हुआ,
विस्तार से जाकर कहा दैत्येश से सुग्रीव ने ।
सुनकर वचन उस दूत के होकर कुपित दैत्येन्द्र ने,
तब धूम्रलोचन से कहा जो था प्रमुख सेनापती ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हे धूम्रलोचन साथ ले निज सैन्य को तुम शीघ्र ही,
लाओ यहां उस दुष्ट को झोंटा पकड़ करके अभी ।
गन्धर्व सुर या यक्ष जो रक्षा वहां उसकी करें,
यमलोक को पहुंचा उन्हें, आओ बलात् लाकर उसे ।।

ऋषि ने कहा आदेश पा वह धूम्रलोचन शीघ्र ही,
ले सैन्य षष्ठि सहस्त्र को प्रस्थित हुआ पहुंचा वहां ।
देखी हिमालय संस्थिता देवी कहा दैत्येश ने,
आओ चलो अब शीघ्र ही तुम पास दानवराज के ।।

झोंटा पकड़ बल से नहीं तो ले चलूंगा खींच के,
बोली शिवा दैत्येन्द्र प्रेषित बलवान बल से युक्त हो ।
लेजा रहे बल से मुझे तो कर सकूं मैं क्या भला,
दौड़ा असुर उसकी तरफ, सुनकर, अहो ऋषि ने कहा ।।

हुंकार से ही अम्बिका ने भस्म उसको कर दिया,
फिर क्रुद्ध दानव सैन्य ने अरु चण्डिका ने भी वहां ।
वर्षा शरों की तीव्र की अरु शक्ति परशू आदि की,
अति क्रोध से कर गर्जना हिलती सटा से केशरी ।

था दैत्य सेना पर चढ़ा वह दिव्यवाहन वेग से,
मार पंजों से किसी को मुख से किसी को दाढ़ से ।
आक्रान्त करके सैन्य का संहार वह करने लगा,
नख से किसी के पेट फाड़े क्रुद्ध हो बनराज ने ।।

धड़ से अलग शिर थे किए थप्पड़ लगा करके कई,
शिर और बाजू सैकड़ों के काट कर फेंके अलग ।
केशर हिलाता खून था पीता किसी का पेट से,
सेना सभी क्षणमात्र में वह मृत्यु मुख में झोंक दी ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री देविवाहन सिंह ने, होकर कुपित अति वेग से,
हा धूम्रलोचन मर चुका था चण्डिका हुंकार से ।
सेना विनाशित हो चुकी थी देविवाहन सिंह से,
श्री शुम्भ ने जब ये सुना कांपे अधर क्रोधित हुआ ।।

आदेश तब उसने दिया खल चण्ड मुण्ड प्रचण्ड को,
सेना प्रबल ले साथ में हे चण्ड मुण्ड महाबली ।
जाकर वहां लाओ यहां अब तो उसे तुम शीघ्र ही,
झोंटा पकड़ या बांध कर सन्देह यदि हो युद्ध में ।।

निज आयुधों से मारना दानव सभी उसको वहां,
सिंह को भी मार करके जो दुष्ट उमके पास है ।
बांध करके अम्बिका को तुम शीघ्र ही लाओ यहां,
आदेश उनको शुम्भ ने भावी विवश होकर दिया ।।

षष्ट अध्याय सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सप्तम अध्याय

ध्यान

श्यामल बदन रत्नासना शुककलपठित सुनती हुई,
रख एक पद को पद्म पर वीणा बजाती शशिधरा ।
शंखपात्री पद्ममाला चोली सजी रक्ताम्बरा,
बिन्दी लगी मधुमदभरी मांतगिनी को मैं भजूं ॥

ऋषि ने कहा आदेश पा चतुरंगिणी सेना सहित,
सन्नद्ध होकर आयुधों से चण्ड मुण्ड गये वहां ।
कांचनमयी गिरिराज के ऊंचे शिखर पर अम्बिका,
निज सिंह पर बैठी हुई देखी उन्होंने तब वहां ॥

तत्पर हुए वे देखकर उसको पकड़ने के लिए,
धनु खींचके कर खड्ग ले, वे पास उसके कुछ गये ।
तब अम्बिका ने शत्रुओं पर क्रोध अतिशय जो किया,
काला पड़ा उससे बदन मसि के सरिस था हो गया ।

भ्रुकटी कुटिल मस्तक हुआ निर्गत हुई उससे अहा,
भीषणमुखी काली तभी असि पाश को कर में लिए ।
अद्भुत लिए खट्वांग को नरमुण्डमाला भूषिता,
चर्म चीते का पहन कर अति शुष्कमांसा भैरवी ॥

था लपलपाती जीभ से भीषण बदन विस्तृत अहा,
थी लाल आंखें धंस रही, गुंजित दिशायें नाद से ।
टूटी झपट कर वेग से वह दानवों की सैन्य पर,
संहारती रिपुसैन्य को काली उन्हें खाने लगी ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हाथी महावत पार्श्वरक्षक घण्टा सहित अंकुश लिए,
कर से पकड़ कर एक ही डाला उन्हें मुख में अहो ।
रथ सारथी घोड़ों सहित योधा सभी मुख में पड़े,
निज दन्त से चर्वित उन्हें थी भैरवी करने लगी ।।

थे केश पकड़े एक के ग्रीवा दबी थी अन्य की,
कुचला किसी को पैर से उर से धकेला अन्य को ।
दानव प्रहित जो अस्त्र थे मुख में लिए अतिरोष से,
उनको चबाकर पीसने वो थी लगी रदपंक्ति से ।।

हा दुष्ट दानव सैन्य को श्री कालिका ने शीघ्र ही,
रौन्दा तथा खाया अहो मारे बहुत आहत हुए ।
तलवार से मारे कई थे खट्वांग से ताड़ित हुए,
दन्ताग्र से कुचले कई थे दैत्य वे मरने लगे ।।

क्षण में हुई सेना सभी हत कालिका से देख के,
था चण्ड ने धावा किया तब कालिका पर वेग से ।
बरसा भयानक कर शरों की फेंक चक्र सहस्त्रशः,
उस भीमनयना कालिका को मुण्ड ने था ढक दिया ।।

मुख में समाते कालिका के वे अनेकों चक्र थे,
मानों बहुत रविबिम्ब हों घनतर घनों में घुस रहे ।
हंसने लगी तब रोष से खरगर्जना काली वहां,
विक्रान्त मुख में दन्त तब दुर्दर्श उज्वल हन्त थे ।।

हुंकारती तलवार ले तब चन्ड पर चण्डी बढ़ी,
शिर को पकड़ कर केश से काटा उसी तलवार से ।
था मुण्ड दौड़ा वेग से तब चण्ड को मृत देख के,
हा खड्ग से आहत हुआ तब मुण्ड भी था सो गया ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हतशेष दानवसैन्य ने मृत चण्ड मुण्ड प्रचण्ड को,
देखा सभी भयभीत हो चारों तरफ भगने लगे ।
शिर चण्ड का अरु मुण्ड का ले हाथ में तब कालिका,
वह साट्टहासा चण्डिका के पास जा कहने लगी ॥
ये चण्ड मुण्ड महापशू हूं भेंट करती आपको,
रणयज्ञ में मारो स्वयं तुम शुम्भ और निशुम्भ को ।
लाये हुए उस चण्ड को अरु मुण्ड को भी देख के,
कल्याणिनी श्री चण्डिका ने प्रेम से उससे कहा ॥
जो चण्ड मुण्ड प्रचण्ड को लाकर शुभे आई यहां,
चामुण्डिका के नाम से तुम ख्यात होंगी विश्व में ॥

सप्तम अध्याय सम्पूर्ण

अष्टम अध्याय

ध्यान

करुणा तरंगित अक्षिणी अरुणानना करुणापरा,
कर पाश अंकुश बाण धनु धारण किये वरदायिनी ।
अणिमादि सिद्धि समूह से, है जो घिरी परमेश्वरी,
देवी भवानी सिद्धिदा वह ध्यान में मेरे बसे ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ऋषि ने कहा राजन् सुना जब शुम्भ दानवराज ने,
हत चण्ड मुण्ड रहे नहीं सेना सभी मारी गई ।
तब क्रोध से व्याकुल हुए अतिशय प्रतापी शुम्भ ने,
आदेश सेना को दिया संग्राम के उद्योग का ॥

जावें उदायुध छियासी सेनापती निज सैन्य ले,
कम्बू चुरासी भी चलें निज सैन्य लेकर साथ में ।
कुल कोटिवीर्य पचास भी प्रस्थान जल्दी ही करें,
सौ धूम्र कुल सेनापती आदेश पा आगे बढ़ें ॥

मौर्य कालक और दौर्हृद कालिकेय असुर सभी,
आदेश से मेरे अभी सन्नद्ध हों प्रस्थान को ।
इस भांति से आदेश दे वह भीमशासक शुम्भ भी,
सेना सहस्त्रों से घिरा था युद्ध को प्रस्थित हुआ ॥

आते भयानक सैन्य को श्री चण्डिका ने देख के,
निज चाप की टंकार से आकाश को गुंजित किया ।
राजन् दहाड़ा सिंह भी गर्जन भयानक था अहो,
घण्टास्वनों से शब्द को श्री चण्डि ने वर्धित किया ॥

ज्या सिंह घण्टानाद से गुंजित दिशायें होगई,
काली करालो का अहा विस्तृत हुआ मुख नाद से ।
सुन नाद सेना दैत्य की चारों तरफ से थी बढ़ी,
घेरे उन्होंने क्रुद्ध हो तब सिंह काली चण्डिका ॥

खल दैत्यगण के नाश को इस बीच आई शक्तियां,
कल्याण हित सुरवृन्द के अति वीर्य बल से संयुता ।
कार्तिक चतुर्मुख विष्णु की शंकर तथा देवेन्द्र की,
तद्रूप निकली देह से, श्री चण्डिका के पास थी ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जिस देव का जो रूप भूषण और वाहन था वही,
धारण किये वे शक्तियां युद्धार्थ थी आई वहां ।
सित हंस युक्त विमान में माला कमण्डलु धारिणी,
आई चतुर्मुख शक्ति थी कहते जिसे ब्रह्माणि हैं ।।

वृषवाहिनी माहेश्वरी कर में त्रिशूल लिए हुए,
थी सर्पकंकण सज्जिता शशिशेखरा आई वहां ।
कौमारिका शिखिवाहिनी निजशक्ति लेकर हाथ में,
संग्राम में आई वहां श्री अम्बिका गुहरूपिणी ।।

गरुड़ाधिरूढ़ा वैष्णवी आई उसी विधि थी वहां,
श्री शंख चक्र गदा धनुष अरु खड्ग लेकर हाथ में ।
रूप यज्ञ वराह का अनुपम लिए श्री शक्ति थी,
आई वहां श्री विष्णु की वाराह तनु धारण किए ।।

श्री नारसिंही आगई नरसिंह वपु धारण किये,
हिलती सटा से शक्ति की प्रक्षिप्त थे तारे हुए ।
गजराज पर बैठी हुई ऐन्द्री कुलिश कर में लिए,
आँखे हजार सुशोभिता श्री इन्द्रसम पहुंची वहां ।।

थे देवशक्ति घिरे हुए श्री शम्भु तब कहने लगे,
मम प्रीति हित हे चण्डिके ! इन दानवों को मारिये ।
तब चण्डिका तन से हुई उग्रा प्रकट अति भीषणा,
श्री चण्डिका की शक्ति थी हा शतशिवासमनादिनी ।।

कहने लगी अपराजिता वह धूर्जटी श्री शम्भु से,
भगवन् बनो तुम दूत जाकर पास शुम्भ निशुम्भ के ।
कह दो प्रभो उन दानवों से गर्व में जो चूर्ण हैं,
सन्देश मेरा शीघ्र जाकर शुम्भ और निशुम्भ से ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो अन्य भी दानव बली युद्धार्थ हों आयें वहाँ,
त्रैलोक्य शासक इन्द्र हों मखभाग भोगें देवता ।
पाताल वे जाँवें सभी जीना अगर हों चाहते,
अवलेप से बल के अगर हो चाह रण की जो तुम्हें ।।

तो आइये मेरी शिवायें दैत्य शोणित तृप्त हों,
शिव को बनाया दूत था उस देवि ने इस हेतु ही ।
शिवदूतिका के नाम से विख्यात है जग में हुई,
देवी वचन शिव के कहे सुनकर महासुर वे सभी ।।

अतिक्रोध में भरकर गये कात्यायनी थी स्थित जहां,
उद्धत असुर करने लगे शरशक्ति वरसा पूर्व ही ।
बाण शक्ति त्रिशूल फरसो फेंके हुए उनके सभी,
काटे सहज ही चण्डि ने धनुमुक्त शरसन्धान से ।।

आगे बढ़ी काली वहां निजशूल से खट्वांग से,
थी शत्रुओं को चीरती रण में भ्रमण करने लगी ।
श्री ब्रह्मशक्ती वेग से जिस ओर भी थी दौड़ती,
पानी कमण्डलु का गिरा रिपुवीर्य थी हरने लगी ।।

त्रैशूल से माहेश्वरी अरु चक्र से श्री वैष्णवी,
क्रुद्धा कुमारी शक्ति से थी दैत्यवध करने लगी ।
ऐन्द्री कुलिश से दीर्ण होकर रक्तधार बिखेरते,
थे सैंकड़ों दानव वहां रणभूमि में लुण्ठित हुए ।

हत थूथनों की मार से अरु दाढ़ की खरधार से,
वाराहिका के चक्र से मारे कई मरने लगे ।
नखदीर्ण कर खाती हुई रिपुसैन्य को नरसिंहनी,
गुंजित दिशा आकाश कर रण में भ्रमण करने लगी ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चण्डाट्टहासों से असुर शिवदूति के डरते हुए,
भू पर गिरे उनको शिवा निजग्रास थी करने लगी ।
थे मातृगण मर्दित दनुज नाना तरीकों से मरे,
हा दैत्य सेना देखकर चारों तरफ भगने लगी ॥

होते पलायित देख के मातृगण पीड़ित उन्हें,
था क्रुद्ध होकर युद्ध में तब रक्तबीज बढ़ा वहां ।
हा रक्त बूंद शरीर से जब भूमि पर उसकी गिरें,
होते महासुर थे बली उतने वहां तत्क्षण खड़े ॥

लेकर गदा वह हाथ में इन्द्राणि से था भिड़ गया,
ऐन्द्री कुलिश की चोट से आहत हुआ दानव वहां ।
तब बज्रविक्षत देह से शोणित बहुत निःसृत हुआ,
योधा हुए उससे खड़े था रूप विक्रम वही,

जितनी रुधिर की बूंद थी हा भूमि पर उसकी गिरी,
दानव हुए उतने खड़े था रूपबल विक्रम वही ।
वे रक्तसम्भव दैत्य भी लड़ने लगे फिर युद्ध में,
अत्युग्रशस्त्र प्रहार से थे मातृगण के साथ में ॥

ऐन्द्री कुलिश की मार से शिर दैत्य का घायल हुआ,
बहते हुए उस रक्त से पैदा हजारों हो गए ।
श्री वैष्णवी ने चक्र से निज, दैत्य को आहत किया,
ऐन्द्री गदा लेकर बढ़ी मारी दबा कर दैत्य को ॥

श्री वैष्णवी के चक्र से कट रक्तधारा जो बही,
उससे उठे दानव हजारों विश्व में थे भर गये ।
कौमारिका भी शक्ति से वाराहिका निज खड्ग से,
त्रैशूल से माहेश्वरी थी मारने उसको लगी ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

था मारने सबको लगा निज हाथ में लेकर गदा,
होकर कुपित दानव बली वह रक्तबीज पृथक् पृथक् ।
शूलादि शक्ति प्रहार से आहत दनुज अतिशय हुआ,
उस रक्त से थे सैकड़ों दानव वहां पैदा हुए ।।

उन रक्त सम्भव दानवों से व्याप्त जग को देख के,
अति भीत होकर देवता होने उदास सभी लगे ।
उनको दुखी तब देख कर बोली त्वरा से चण्डिका,
विस्तीर्ण अपना मुख करो चामुण्डिके तुम वेग से ।।

जो बूंद इसके देह से मम शस्त्र आहत हों गिरें,
दैत्यों सहित उनको शुभे ! निज वक्र में लो वेग से ।
रक्त जन्मा दानवों को खाती हुई रण में चलो,
खाये हुए तुमसे नहीं जब अन्य पैदा हो सकें ।।

तब रिक्तता से रक्त की यह भी मरेगा शीघ्र ही,
यह कह दनुज को चण्डिका ने शूल से आहत किया ।
थी मध्य में ही रक्त को तब कालिका पीने लगी,
मारी गदा तब दैत्य ने श्री चण्डिका पर वेग से ।।

लेकिन तनिक भी वेदना उस देवि को पहुंची नहीं,
घायल असुर की देह से था रक्त ज्यों बहने लगा ।
त्यों ही स्वमुख से कालिका पीने लगी उस खून को,
मुख में गिरे उस रक्त से थे दैत्य जो पैदा हुए ।।

खाती उन्हें चामुण्डिका थी रक्त भी पीने लगी,
असि ऋष्टि बाण कुलिश लिए मारा उसे तब देवि ने ।
थी रक्त जिसका पी चुकी निज वक्र से चामुण्डिका,
हा शस्त्रगण आहत हुआ वह रिक्त होकर रक्त से ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भू पृष्ठ पर था गिर गया हत रक्तबीज महीपते !
तब हर्ष अनुपम था हुआ सब देवगण को भूपते !
अरु रक्त पीकर मत्त होकर थी मातृकायें नाचती,
सुरगण सभी आनन्द से पूरित बधाई बाँटते ॥

अष्टम अध्याय सम्पूर्ण

नवम अध्याय

ध्यान

बन्धूक कांचन सी प्रभा रुचिराक्षमालाधारिणी,
भुजदण्ड में निज पाश अंकुश धारण किए वरदायिनी ।
शशिखण्ड मण्डित शेखरा नेत्रत्रयों से शोभिता,
मैं अर्धनारीश्वरमयी शिवशक्ति का चिन्तन करूं ॥

नृप ने कहा भगवन् मुझे अद्भुत सुनाई है कथा,
देवी चरित महिमा अहो यह रक्तबीज विनाश की ।
हूं चाहता सुनना मुने ! जब रक्तबीज निहत हुआ,
तब शुम्भ और निशुम्भ ने था क्रुद्ध होकर क्या किया ॥

ऋषि ने कहा क्रोधित हुए अति शुम्भ और निशुम्भ थे,
खल रक्तबीज विनाश से अरु दैत्यसेना ह्रास से ।
मरती हुई सेना निजी तब देख क्रुद्ध निशुम्भ ने,
धावा किया अति वेग से निज मुख्य सेना साथ ले ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आगे तथा पीछे खड़े थे पार्श्व में दानव बढ़े,
चर्वित अधर वे क्रोध से थे देविवध को बढ़ रहे ।
आया वहां तब शुम्भ भी सेना सहित अतिशय बली,
था मातृगण से जूझता वह चण्डिका वध को बढ़ा ।।

संग्राम घोर हुआ वहां तब देवि शुम्भ निशुम्भ का,
जैसे बरसते मेघ हों वे बाण बरसाने लगे ।
थी चण्डिका उनके शरों को काटती निज बाण से,
शस्त्रौघ से फिर दानवों के अंग ताड़ित कर रही ।।

ढाल लेकर चमचमाती अति तीक्ष्णतर तलवार से,
तब चोट दैत्य निशुम्भ की मृगराज के माथे पड़ी ।
हो क्षुब्ध उससे देवि ने अति उग्र बाण क्षुरप्र से,
था खड्ग को खण्डित किया अरु अष्ट चन्द्रक ढाल भी,

असि चर्म से तब हीन होकर शक्ति फेंकी दैत्य ने,
आती हुई को चक्र से काटा उसे भी चण्डि ने ।
जलते हुए तब क्रोध से निजशूल फेंका दैत्य ने,
आते हुए को मुष्ठिका से चूर्ण चण्डी ने किया ।

फेंकी असुर ने चण्डिका पर घूमती भीषण गदा,
थी देविक्षिप्त त्रिशूल से हा भस्म वह भी हो गई ।
तब हाथ में फरसा लिए आते हुए उस दैत्य को,
निज तीव्र बाण प्रहार से श्री चण्डि ने मूर्च्छित किया ।।

अति विक्रमी निजभ्रात को देखा पतित जब शुम्भ ने,
तो क्रुद्ध होकर मारने वह अम्बिका को तब बढ़ा ।
शस्त्रास्त्रगण से सज्जिता आठों भुजाओं से निजी,
आकाश को था ढांपकर रथ में असुर शोभित हुआ ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आते असुर को देखकर तब शंख देवी का बजा,
दैवी धनुष टंकार से भी शब्द दुःसह था हुआ ।
गुंजित दिशा करने लगी घण्टास्वनों से चण्डिका,
दैत्यसेना तेज था हा ह्रास ध्वनि से हो रहा ।।

घननाद से तब सिंह के मदहीन गज होने लगे,
आकाश था भरने लगा पूरित हुई दश ही दिशा ।
काली उछल आकाश में आहत धरा धरने लगी,
निजहाथ से उस शब्द से सब स्वन तिरोहित हो गये ।।

भीषण हंसी शिवदूति की ध्वनि थी अशुभ करने लगी,
सुनकर असुर डरने लगे था शुम्भ क्रोधित हो उठा ।
ठहरो दुरात्मन् शुम्भ से श्री चण्डिका ने जब कहा,
आकाश से सब देवता जयकार तब करने लगे ।।

ज्वाला ज्वलित अति भीषणा तब शक्ति छोड़ी शुम्भ ने,
जलते हुए पर्वत सरिस उल्कानिहत भू पर गिरी ।
घननाद से तब शुम्भ के हा लोक तीनों व्याप्त थे,
प्रतिशब्द से राजन् विजित थे हो गये तब शब्द वे ।।

जो बाण छोड़े शुम्भ ने श्री चण्डि ने काटा उन्हें,
श्री चण्डिका के बाण भी थे शुम्भ से कटने लगे ।
श्री चण्डिका ने क्रुद्ध हो तब शूल मारा शुम्भ को,
मूर्च्छित हुआ भू पर गिरा हा शुम्भ आहत शूल से ।।

चैतन्य पा कार्मुक उठा निःशुम्भ तब आगे बढ़ा,
बनराज देवी कालिका को बाण से आहत किया ।
बांहे बना करके अयुत निजचक्र से दनुराज ने,
श्री चण्डिका को ढक लिया था दृश्य अद्भुत वह अहा ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दुर्गातिहा तब भगवती दुर्गा हुई अति क्रुद्ध थी,
निज सायकों से चण्डिका ने नष्ट उनको कर दिया ।
दौड़ा निशुम्भ गदा लिए तब चण्डिका की घात में,
सेना सहित लड़ने लगा, श्री चण्डिका ने खड्ग से ।।

काटी गदा दानव बढ़ा तब शूल लेकर हाथ में,
आते हुए खल देवपीड़क शूलहस्त निशुम्भ के ।
थी वेगपूर्वक चण्डिका ने, शूल उर में घोंप दी,
तब शूलविक्षत देह से निकला पुरुष था दूसरा ।।

हे चण्डिके ठहरो वहीं कहता हुआ अतिशय बली,
थी ठहठहा कर हंस पड़ी सुन बात उसकी चण्डिका ।
था खड्ग खण्डित शिर हुआ दानव धरा पर सो गया,
तब दाढ़ में गर्दन दबाकर सिंह रिपु खाने लगा ।।

काली तथा शिवदूति भी भक्षण उन्हें करने लगी,
कौमारिका निजशक्ति से थी दैत्यमर्दन कर रही ।
थे मंत्रपावित वारि से ब्रह्माणि के दानव मरे,
माहेश्वरी के शूल से थे दैत्यगण कटने लगे ।।

वाराहिका के सूंड से हत चूर्ण दानव गिर पड़े,
थे खण्ड खण्ड स्वचक्र से श्री वैष्णवी ने रिपु किये ।
हा नष्ट ऐन्द्री बज्र से थे सैकड़ों दानव हुए,
कुछ थे मरे कुछ थे भगे जो युद्ध में दानव बचे ।।

भक्षित हुए शिवदूतिका श्री कालिका अरु सिंह से,
दानव हुए निःशेष थे सुरगण सभी सन्तुष्ट थे ।।

नवम अध्याय सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दशम अध्याय

ध्यान

उत्तप्त कांचन सी प्रभा रवि चन्द्र पावक अक्षिणी,
धनु बाण अंकुश पाश को अरु शूल को धारण किए ।
सुन्दर करों पर सुन्दरी जो इन्दुलेखा धारिणी,
कामेश्वरी शिवशक्ति को निजचित्त में धारण करूं ।।

ऋषि ने कहा निज प्राणसम्मित भ्रात को मृत देख के,
हत सैन्य को कहने लगा तब शुम्भ क्रुद्ध अतीव हो ।
अवलेप से बल के अहो दुर्गे घमण्ड करो नहीं,
लेकर सहारा दूसरों का लड़ रही हो मानिनी ।।

उसने कहा मैं एक हूं है कौन मुझसे दूसरी,
तू देख दुष्ट अभी सभी मुझमें समाती शक्तियां ।
ब्रह्माणि आदिक शक्तियां थी लीन तन में हो गई,
उस देवि के तब एक ही जगदम्बिका अवशिष्ट थी ।।

उसने कहा मैं थी अभी निज शक्तियों के साथ में,
वे लीन हैं मैं हूं खड़ी एकाकिनी स्थिर दुष्ट हो ।
ऋषि ने कहा तब देव दानव देखते ही रह गये,
था शुम्भ देवी का परस्पर युद्ध भीषण छिड़ गया ।।

अति घोरतर शरवर्ष से अरु तीक्ष्ण बाण प्रहार से,
था युद्ध दोनों का अहो सब लोकभयप्रद होगया ।
जो सैकड़ों दिव्यास्त्र थे श्री चण्डि के छोड़े हुए,
काटे सभी दैत्येन्द्र ने प्रतिघात कर निज अस्त्र से ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो शुम्भ मोचित दिव्य थे शस्त्रास्त्र उनको थी शिवा,
हुंकार भीषण आदि से हत खेल में करने लगी ।
तब सौ शरों से देवि को आछन्न दानव ने किया,
कुपिता परा ने बाण से काटा धनुष तब दुष्ट का ।
था छिन्न धन्वा दैत्य ने तब शक्ति को धारण किया,
वो भी कटी कर संस्थिता श्री चण्डिका के चक्र से ।
तलवार अरु शतचन्द्र की तब ढाल लेकर हाथ में,
धावा किया श्री चण्डिका पर शुम्भ दानवराज ने ।।

ज्यों ही बढ़ा वह खड्ग, खण्डित अम्बिका ने कर दिया,
रविकर अमल वह ढाल भी शरवर्ष से चूर्णित हुई ।
होकर हताश्व विसारथी तब छिन्नधन्वा दैत्य था,
अति घोर मुद्गर को उठा श्री चण्डिका वध को बढ़ा ।।

काटा उसे भी शीघ्र ही तीखे शरों से देवि ने,
वह दुष्ट मुक्का तानकर फिर भी बढ़ा अति वेग से ।
श्री चण्डिका के पेट पर मुक्का पड़ा अति जोर का,
चांटा लगा तत्क्षण कड़ा तब वक्ष पर दैत्येश के ।।

थप्पड़ प्रहृत दैत्येन्द्र था वह दूर पृथ्वी पर गिरा,
हा किन्तु सहसा उठ खड़ा वह दैत्य सुस्थिर होगया ।
उछला पकड़ कर चण्डि को आकाश में संस्थित हुआ,
नभमध्य में लड़ने लगी आश्रयविहीना ही शिवा ।।

तब सिद्ध मुनि आश्चर्यकर संग्राम वे आकाश में,
पहले अहो करने लगे श्री चण्डिका अरु दैत्य थे ।
कर युद्ध काफी देर तक श्री अम्बिका ने दैत्य को,
पकड़ा घुमाया वेग से भरजोर पटका भूमि में ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भू पर गिरा मुक्का उठा फिर वेग से आगे बढ़ा,
श्री चण्डिका वध के लिए हा दुष्ट उद्यत होगया ।
आते हुए दैत्येश को श्री चण्डिका ने शूल से,
तब चीर करके वक्ष को, था भूमि पर लुढ़का दिया ॥

शूलाग्र विक्षत शुम्भ के थे प्राण निर्गत हो गये,
भू पर गिरा भूधर धरा द्वीपाब्धि कम्पित हो उठे ।
सारा जगत खुश था हुआ हा दुष्ट दानव मृत्यु से,
आकाश निर्मल होगया जन स्वस्थ सारे हो गये ।

उत्पात सूचक मेघ भी उल्का सहित सब शान्त थे,
नदियां सभी बहने लगी निजमार्ग से भयमुक्त हो ।
थे शुम्भ वध से होगये सब हर्षगद्गद देवता,
गन्धर्व थे गाने लगे अरु कुछ बजाने लग गये ॥

सब अप्सरायें स्वर्ग की तब नृत्य थी करने लगी,
बहने लगा पावित पवन था सूर्य सुप्रभ होगया ।
शान्ताग्नि थी जलने लगी दिक् शब्द सारे शान्त थे,
सम्पूर्ण जग था स्वस्थ हो गुण चण्डि के गाने लगा ॥

दशम अध्याय सम्पूर्ण

— ——

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

एकादश अध्याय

ध्यान

उगते हुए रवि सी प्रभा शशि के मुकुट से मण्डिता,
उन्नत उरोजा सुन्दरी नेत्रत्रयों से सज्जिता ।
वर पाश अंकुश अरु अभय कर में लिए सस्मित मुखी,
भुवनेश्वरी श्री चण्डिका को सर्वदा भजता रहूं ।।

ऋषि ने कहा वध के अनन्तर दुष्ट दानवराज के,
श्री अग्नि को आगे किए सब इन्द्र आदिक देवता ।
कात्यायनी की प्रार्थना करने लगे सन्तुष्ट हो,
मुख पंकजों की कान्ति से होने लगी जगमग दिशा ।।

आपन्नजन पीड़ाहरे ! हम पर प्रसन्न सदा रहो,
सारे जगत की मात तुम रहना मुदित हम पर सदा ।
विश्वेश्वरी होकर मुदित सब विश्व की रक्षा करो,
हे देवि तुम सारे चराचर विश्व की हो ईश्वरी ।।

आधारभूता विश्व की केवल तुम्हीं हो अम्बिके,
तुम ही धरा के रूप में स्थित लोक धारण कर रही ।
जलरुपिणी तुम ही सदा हो तृप्ति जग को दे रही,
दुर्लंध्य है विक्रम शिवे ! तेरा चराचर में अहो ।।

हे हे अनन्तबले ! शुभे तुम शक्ति हो श्री वैष्णवी,
हो बीजरूपा विश्व की माया तुम्हीं परमा परा ।
मोहित हुआ संसार ये सारा तुम्हीं से देवि है,
होकर प्रसन्न तुम्हीं शुभे ! हो मोक्ष देती विश्व में ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सम्पूर्ण विद्यायें तुम्हारे भिन्न भिन्न शरीर हैं,
संसार में सब नारियां भी देवि ! तेरे रूप हैं ।
तुम एक ही सब विश्व को पूरित किये हो अम्बिके !
स्तुति क्या करें स्तुति से परे वाणी परा तुम हो शिवे ।।

हो स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी तुम सर्वभूता देवि हो,
स्तुति है यही तेरी अहो इससे अधिक हम क्या कहें ।
हो बुद्धिरूपा संस्थिता सबके हृदय में अम्बिके !
हे स्वर्ग मोक्ष प्रदायिके ! नारायणी तुमको नमः ।।

काष्ठा कलादिक रुप में परिणाम क्रम की दायिनी,
संहार सक्षम विश्व की नारायणी तुमको नमः ।
मांगल्यदे मंगलमयी सर्वार्थ साधिनि हे शिवे,
गौरी शरण्ये ! त्र्यम्बके ! नारायणी तुमको नमः ।।

सृष्टि स्थिती संहार की हे शक्ति भूते शाश्वते !,
हे गुणमये गुण आश्रये ! नारायणी तुमको नमः ।
आगत शरण दीनार्त को परित्राण दायिनि वत्सले !
सर्वार्ति हारिणि देवि हे नारायणी तुमको नमः ।।

सितहंसयुक्त विमानगे ! जलकुशक्षरण करती हुई,
ब्रह्माणिरुपे ! देवि ! हे नारायणी तुमको नमः ।
त्रैशूल चन्द्र भुजंगधारिणि, वृषभवाहन संस्थिते !
माहेश्वरी के रूप में नारायणी तुमको नमः ।।

हे शंख चक्र गदा धनुष धारण किये परमायुधे !
श्री वैष्णवी रहना मुदित नारायणी तुमको नमः ।
कुक्कुट मयूरों से घिरी हे शक्तिधारिणि पावने !
देवी कुमारी रूपिणी नारायणी तुमको नमः ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

विश्वार्ति हारिणि हैं प्रणत होवो प्रसन्न सदा शिवे !
त्रैलोक्यजन आराधिते ! वरदायिनी सबको बनो ।
वरदान को उद्यत हुई बोली शिवा हे सुरगणों,
वर जो मनेप्सित चाहिए जग के लिए उसको वरो ।।

होकर मुदित सब देवता वरयाचना करने लगे,
बाधा समस्त त्रिलोक की परमेश्वरी हरती रहो ।
इस भांति ही करती रहो वध वैरियों का सर्वदा,
वोली परा, वैवस्वती, अठ्ठाइस्वें मन्वन्त में ।।

ये शुम्भ और निशुम्भ फिर उत्पन्न होंगे विश्व में,
तब नन्द के घर में यशोदा गर्भ से मैं जन्म ले ।
बन विन्ध्यवासिनि फिर वहां उनको हनूंगी गोपजा,
अवतीर्ण हूंगी फिर धरा पर घोर रौद्र स्वरूप में ।।

तब वैप्रचित्त असुर गणों को मारती मैं वेग से,
विचरण करूंगी झूमती, खाती हुई उनको वहां ।
तब दाड़िमों के फूलसम मम दन्त होंगे रक्त हा,
स्वर्ग के सब देवतागण और मानव मर्त्य के ।।

मेरा स्तवन करने लगेंगे रक्तदन्ता नाम से,
जलहीन जग सौ वर्ष तक वर्षा बिना होगा सुरो ।
हूंगी प्रकट मुनिसंस्तुता तब मैं अयोनिज रूप में,
निजनेत्रशत से मुनि गणों को देखने से तब मुझे ।।

देवी शताक्षी नाम से मानव भजेंगे विश्व में,
निज देह उद्भव शाक से पालन करूंगी विश्व का ।
जग की अवर्षण काल में रक्षा करेंगे शाक ही,
शाकम्भरी के नाम से तब ख्यात हूंगी विश्व में ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दुगर्म असुर का भी वहीं पर वध करूंगी मैं सुरो !
दुर्गा जगत में नाम तब मम ख्यात होगा सर्वदा ।
रक्षार्थ मुनियों के कभी निज भीम रूप किये हुए,
हिमवान में भक्षण करूंगी राक्षसों का वेग से ।।

भीमा इसी से ख्यात मेरा नाम होगा विश्व में,
आरुण असुर त्रैलोक्य में बाधा करेगा जब वहां ।
रुप भौंरों का बना षट्पद असंख्यक तब वहां,
त्रैलोक्य हित के हेतु मैं फिर वध करूंगी दैत्य का ।।

तब भ्रामरी के नाम से सर्वत्र हूंगी संस्तुता,
बाधा जगत में व्याप्त हों इस भांति जब जब दैत्यजा ।
तब नाश को उनके सदा अवतीर्ण होकर विश्व में,
रक्षा करूंगी मैं सदा खल शत्रुओं को मार के ।।

एकादश अध्याय सम्पूर्ण

———

द्वादश अध्याय

ध्यान

उद्दाम विद्युत सी प्रभा स्कन्धस्थिता मृगराज की,
करवाल खेटक धारिणी कन्यागणों से सेविता ।
असि चक्र खेट गदा विशिख गुण चाप तर्जनि कर लिए,
अनलात्मिका शशिधारिणी दुर्गा त्रिनेत्रा को भजूं ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बोली परा हे देवगण , जो नर करेगा संस्तुती,
इन सब स्तवों से वह सदा मेरी कृपा का पात्र है ।
बाधा सभी उसकी बिना संशय हरूंगी मैं सदा ।
मधु और कैटभ नाश को दानव महिष संघात को ।।

वध शुम्भ और निशुम्भ को जो नर पढ़ेंगे भक्ति से,
जो अष्टमी नवमी तथा चौदस तिथि को प्रेम से ।
एकाग्र होकर के सुनें माहात्म्य मेरा श्रेष्ठ ये,
दुष्कृत उन्हें होंगे नहीं दुष्कृत जनित नहिं आपदा ।।

होगा नहीं दारिद्र्य प्रियजन, भी कभी बिछुड़ें नहीं,
राजा लुटेरे शत्रुओं से भय कभी होगा नहीं ।
शस्त्राग्नि जल से भी कभी खतरा उन्हें होगा नहीं,
माहात्म्य मेरा प्रेम से अत एव नर नित ही पढ़ें ।।

एकाग्र हो करके सुनें कल्याणप्रद माहात्म्य को,
माया महामारी जनित सब ही उपद्रव शान्त हों ।
उत्पात तीनों भांति के माहात्म्य से मम दूर हों,
जिस स्थान पर माहात्म्य ये मेरा पढ़ें नर नित्य ही ।।

हूं छोड़ती उसको नहीं रहती सदा संस्थित वहां,
बलिदान पूजा यज्ञ में सब विध महोत्सव आदि में ।
सारे चरित मेरे पढ़ें या फिर सुनें नर भक्ति से,
विधिज्ञान या अज्ञान से इस भांति जो पूजा करें ।।

बलि यज्ञ भी उनके ग्रहण मैं सब करूंगी प्रीति से,
पूजा शरद में वार्षिकी नवरात्रियों में ख्यात जो ।
उसमें सुनें माहत्म्य ये श्रद्धा समन्वित प्रेम से,
सद्भक्ति से सम्पन्न हो, चण्डीस्तवन जो नर पढ़े ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बाधा रहित सब भाँति से धन धान्य सुत से युक्त हो,
मेरी कृपा से नर सदा सन्देह इसमें कुछ नहीं ।
माहात्म्य मेरा दिव्य ये, उत्पत्तियों की शुभकथा,
मम युद्ध विक्रम को सुने रण में मनुज निर्भय बने ।।

सब शत्रु होते नष्ट हैं कल्याण होता सर्वदा,
माहात्म्य मेरा कर श्रवण सुख मोद पाता वंश है ।
सब शान्ति कर्मों में तथा दुःस्वप्नदर्शन आदि में,
ग्रहजन्य पीड़ा उग्र में माहात्म्य ये मेरा सुने ।।

उपसर्ग होते शान्त हैं खेचर जनित पीड़ा सभी,
देखे हुए दुःस्वप्न भी सुस्वप्न में परिवृत्त हों ।
बालग्रहों से ग्रस्त शिशु हैं स्वस्थ होते शीघ्र ही,
दो व्यक्तियों की फूट में मैत्रीकरण यह स्तोत्र है ।।

करता महात्म्य विनाश यह दुर्वृत्त जन के वीर्य का,
रक्ष भूत पिशाच आदिक इसके पठन से नष्ट हों ।
माहात्म्य ये मेरा सभी सामीप्यकारक दिव्य हैं,
धूप दीप सुगन्ध उत्तम, पशु से तथा पुष्पार्घ्य से ।।

विप्रभोजन होम से प्रतिदिन किये अभिषेक से,
अन्य भोगों से भी विविध वर्ष भर के दान से ।
है प्रीति होती जो मुझे वह एक ही भी बार के,
होती श्रवण से प्राप्त है इस चण्डिका के स्तोत्र के ।।

सब पाप होते दूर हैं आरोग्य मिलता है तथा,
रक्षा करे मेरा चरित, सुन भूतबाधा दूर हों ।
दुष्ट दानव नाश के जो मम युद्धजन्य प्रसंग हैं,
सुनकर उन्हें भय वैरिकृत नर को कभी होता नहीं ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

स्तुतियां हमारी आपसे ब्रह्मर्षियों से जो हुई,
और विधि से वे सभी सद्बुद्धि देती दिव्य हैं।
बन में विजन बनमार्ग में दावा अनल के मध्य में,
एकान्त में हो दस्यु पीड़ित शत्रुओं की कैद में ।।

निर्जन बनों में सिंह व्याघ्रों बन गजों से त्रस्त हो,
पाकर सजा भूपाल से गतवध्यबन्धन स्थान में।
डगमग हुई तूफान से जब नाव सागर मध्य हो,
हो शस्त्रवर्षा होरही भीषण भयंकर युद्ध में ।।

बाधा भयानक आपड़ें जब वेदनायें तीव्र हों,
करके श्रवण मेरा चरित नर संकटों से मुक्त हो।
मेरे प्रभाव विशेष से सिंहादि, अरि, डाकू सभी,
हैं दूर से ही भागते करके स्मरण मेरा चरित ।।

ऋषि ने कहा यह कह वहीं पर चण्डविक्रम चण्डिका,
सुरगणों के देखते ही अन्तर्हिता थी होगई।
हो शत्रुवध से भयरहित, निज पूर्ववत् अधिकार को,
पाकर लगे सुर भोगने यज्ञादि के हविभाग को ।।

जगध्वंसि वीर पराक्रमी उस देवपीड़क शुम्भ को,
अतिशय बली निःशुम्भ को भी चण्डिकाहत देख के।
मृतशेष थे दानव सभी भागे गये पाताल को,
इस भांति नित्या शाश्वती भी बार बार पराम्बिका ।।

होकर प्रकट करती सदा राजन् जगत की पालना,
है मोहती वह विश्व को जग जन्मदात्री भी वही।
वह प्रार्थिता सन्तुष्ट हो विज्ञान सम्पद् दायिनी,
ब्रह्माण्ड में सब व्याप्त है राजन् वही केवल वही ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कल्पान्त में जो कालरुपा मारी महा, काली महा,
करती प्रलय इस विश्व का, ब्रह्माण्ड में वह व्याप्त है।
होती महामारी वही, है सृष्टि भी होती अजा,
करती समय पर भूतरक्षा देवी वही है शाश्वती ॥

भवकाल में नर को वही धनधान्य वृद्धि प्रदायिनी,
खोटे दिनों में नाश का कारण गरीबी भी वही।
धूप दीप प्रसून आदिक से पूजिता अरु संस्तुता,
धन पुत्र धार्मिक मति तथा सद्गतिप्रदा है भगवती ॥

द्वादश अध्याय सम्पूर्ण

त्रयोदश अध्याय

ध्यान

उगते हुए रविबिम्ब सी सुन्दर प्रभा है देह की,
जो भुज चतुष्टय सज्जिता नेत्रत्रयों से शोभिता।
वरपाश अंकुश अरु अभय धारण किये भुजदण्ड में,
देवी शिवा को मैं भजूं मन में बसे वह सर्वदा ॥

बोले मुनी राजन् कहा माहात्म्य उत्तम देवि का,
जग धारिणी उस चण्डिका का है प्रभाव इसी तरह।
विद्या वही है मोहती श्री विष्णुमाया भगवती,
आपको इन वैश्य को जो विज्ञ जन हैं अन्य भी ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मोहित हुए हैं और होंगे जन सर्वदा इस विश्व में,
जाओ शरण राजन् उसी परमेश्वरी के आप भी ।
आराधिता नर को वही है भक्ति मुक्ति सुस्वर्गदा,
मार्कण्डसुत कहने लगे श्री क्रौष्टुकी से यह कथा ।।

भूपति सुरथ ने सुन वचन मेधा मुनी के तब उन्हें,
करके प्रणाम विनम्र हो, उत्तम व्रती ऋषि श्रेष्ठ को ।
हो खिन्न ममताधिक्य से अरु राज्य के अपभ्रंश से,
तप को गये नृप वैश्य भी तब देविदर्शन के लिए ।।

तट पर नदी के बैठकर दोनों तपस्या में लगे,
कर जाप देवीसूक्त का वह वैश्य तप करने लगा ।
मृण्मूर्ति देवी की बना दोनों नदी के तीर पर,
धूप तर्पण पुष्प हवि से आराधना करने लगे ।।

कर संयमित आहार को, फिर छोड़ करके सर्वथा,
होकर समाहित, चित्त को एकाग्र चण्डी में लगा ।
निज रक्त प्रोक्षित मित्र वे, बलिदान भी करते रहे,
संयम सहित इस भांति वे तब तीन वर्षों तक वहां ।।

आराधना करते रहे, सन्तुष्ट होकर चण्डिका,
होकर प्रकट प्रत्यक्ष ही जगधारिणी कहने लगी ।
बोली परा, सन्तुष्ट मैं तप से तुम्हारे आज हूं,
राजन् तथा कुलश्रेष्ठ तुम निज निज अभीप्सित को कहो ।।

वरदान जो भी काम्य हो सन्तुष्ट मैं दूंगी वही,
मार्कण्ड सुत बोले नृपति ने, जो सर्वदा अविनाशि हो ।
वह राज्य मांगा देवि से, अगले जनम के हेतु था,
इस जन्म में निज राज्य को जो शत्रु संकट मुक्त हो ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अति खिन्नमन उस वैश्य ने थी याचना की ज्ञान की,
ममता अहं आसक्तियां सब दूर जिससे हो सकें ।
बोली शिवा कुछ ही दिनों में राज्य तुमको भूपते !
अपना मिलेगा शीघ्र ही सब शत्रुओं को मार के ।।

निज राज्य का सुख आपको, सुस्थिर मिलेगा भूपते,
मर कर विवस्वत अंश से फिर जन्म लोगे भूमि में ।
सावर्णि मनु के नाम से तब ख्यात होंगे विश्व में,
हे वैश्यवर ! वरयाचना जो आपने की मैं वही ।।

वर देरही, होगा तुम्हें शुभ मुक्ति दायक ज्ञान ही,
मार्कण्डसुत बोले उन्हें वरदान देकर चण्डिका ।
अन्तर्हिता तत्क्षण हुई होकर उन्हीं से संस्तुता,
क्षत्रियप्रवर राजा सुरथ वर प्राप्त कर इस भांति से ।।

वह जन्म लेकर सूर्य से सावर्णि मनु के नाम से,
विख्यात है जग में हुआ श्री देविभक्ति प्रताप से ।
इस भांति वर को प्राप्त कर सुरथ भूप शिरोमणी,
वह जन्म लेकर सूर्य से सावर्णि मनु थे होगये ।।

'क्लीं'–त्रयोदश अध्याय एवं उत्तमचरित सम्पूर्ण

———

इसके अनन्तर नवार्ण मंत्र विधि पृष्ठ १० से १३ तक के अनुसार अंगन्यास करके १०८ बार 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मंत्र का जप करें ।

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उत्तरन्यास

करन्यास-ॐह्रीं अगुष्टाभ्यां नमः। ॐचं तर्जनिभ्याम् नमः।
ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐयैं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐह्रीं चण्डिकायै करतल करपृष्ठाभ्यां
नमः।

हृदयादिन्यास—ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी
तथा।
शंखिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ।। हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि, पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।। शिरसे स्वाहा
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याँ च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ।। शिखायै वषट् ।।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मान् तथा भुवम् ।। कवचाय
हुम् ।।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके।
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।। नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशि सर्वशक्ति समन्विते !।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।। अस्त्राय फट्।

ध्यान

उद्दाम विद्युत सी प्रभा स्कन्धस्थिता मृगराज की,
करवाल खेटक धारिणी कन्यागणों से सेविता।
असि चक्र खेट गदा विशिख गुण चाप तर्जनि कर लिए,
अनलात्मिका शशिधारिणी दुर्गा त्रिनेत्रा को भजूं ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

देवीसूक्त

देवी महा देवी शिवे करते सतत तुमको नमः
होकर प्रणत हम हैं नियत भद्रे ! प्रकृति करते नमः ।।
रौद्रे ! प्रणति नित्ये तुम्हें हे गौरि ! धात्रिस्वरूपिणी,
ज्योत्स्ने सुखे हे इन्दुरूपे करते सतत तुमको नमः ।।

शरणागतों को वृद्धिदे हे सिद्धिदे करते नमः ।
हे राजलक्ष्मी नैर्ऋते शर्वाणि तुमको है नमः ।।
हे सर्वकारिणि दुर्गतारिणि ! सारभूते ख्यातिके ।
कृष्णे ! तथा धूम्रे तुम्हें दुर्गे ! सदा करते नमः ।।

अति सौम्य रौद्रस्वरूपिणी जगदम्बिके तुमको नमः
आधारभूता विश्व की कृति देवि को करते नमः ।।
सब प्राणियों में विष्णुमाया रूप में जो संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

सब प्राणियों में चेतना के रूप में जो व्याप्त है,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
सब प्राणियों में बुद्धिरूपा जो सर्वदा है संस्थिता ।
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

सब प्राणियों में नींद रूपा जो सर्वदा है संस्थिता ।
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।
जो भूख बनकर संस्थिता सब प्राणियों में सर्वदा ।
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

जो नित्य छाया रूप में सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो शक्तिभूता संस्थिता सब प्राणियों में सर्वदा,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
तृष्णास्वरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

जो क्षान्तिरूपा सर्वदा है प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो जातिरूपा संस्थिता सब प्राणियों में सर्वदा,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

लज्जास्वरूपा सर्वदा जो प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो शान्तिरूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

श्रद्धा स्वरूपा सर्वदा जो प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो कान्तिरूपा सर्वदा है प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

लक्ष्मी स्वरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
जो वृत्तिरूपा सर्वदा है प्राणिगण में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।।

स्मृतिरूप से जो सर्वदा है प्राणियों मे संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।
देवी दया के रुप में जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिऐ करते नमः ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

है तुष्टिरूपा सर्वदा जो प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।

जो मातृरूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।

जो भ्रान्ति रूपा सर्वदा सब प्राणियों में संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।

अधिदेवता जो इन्द्रियों की भूतगण में व्याप्त है,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।

चितिरूप से सारे जगत को व्याप्त कर जो संस्थिता,
हम बार बार विनम्र हो उसके लिए करते नमः ।

पहले अभीप्सित प्राप्त कर जो देवगण से संस्तुता,
सुरराज से लम्बे समय तक सेविता जो भगवती ।
कल्याण की है हेतु जो कल्याणदा परमेश्वरी,
हर के हमारी आपदा मंगल करे वह सर्वदा ।।

हम देवगण जिसका स्तवन हैं भक्ति से नत कर रहे,
हैं दुष्ट दैत्यों से निपीड़ित याद जिसको कर रहे ।
देवी शिवा वह संस्तुता सुरबृन्द से अब शीघ्र ही,
आपत्तियों को दूर कर सब भांति से रक्षा करे ।।

श्री देविसूक्त सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्राधानिक रहस्य

नृप ने कहा भगवन् कहे हैं चण्डिका अवतार जो,
ये आपने उनकी प्रकृति ब्रह्मन् तथा प्राधान्य भी ।
द्विजश्रेष्ठ चरणों में प्रणत हूं ठीक २ बताइये,
श्री चण्डिका आराधना किस रूप विधि से मैं करूं ॥
ऋषि ने कहा राजन् यदपि परम गोप्य रहस्य ये,
पर भक्त हो तुमसे न कुछ भी है अवाच्य महीपते ।
है आदि सबकी त्रैगुणी, लक्ष्मी महा, परमेश्वरी,
दृश्या अदृश्या रूप से सम्पूर्ण जग में व्याप्त जो ॥
बैजोरफल खेटक गदा अरु पान पात्र प्रधारिणी,
है नागलिंग सुयोनि को राजन् धरे निज शीष में ।
वह तप्तकांचन वर्णिनी अरु तप्त कांचन भूषणा,
उसने किया निज तेज से यह शून्य जग परिपूर्ण है ॥
परमेश्वरी ने देखकर सम्पूर्ण जग को शून्य ही,
धारण किया निज रूप था तब दूसरा तामस गुणी ।
वह भिन्न अंजनसन्निभा दंष्ट्राकराल वरानना,
नारी विशाल विलोचना तनु मध्यमा उद्गत हुई ॥
पात्र खेटक खड्ग मुण्डों से सज्जिता चारों भुजा,
माला कवन्ध स्ववक्ष पर शिर मुण्डमाला धारिणी ।
वह तामसी प्रमदोत्तमा श्री लक्ष्मि से कहने लगी,
मां नाम काम बताइये मुझको तुम्हें मेरा नमः ॥
तामसी प्रमदोत्तमा को लक्ष्मी महा ने तब कहा,
हूं देरही तब नाम मैं अरु काम जो हैं शोभने !
माया महा, काली महा, मारी महा निद्रा तृषा,
तृष्णा क्षुधा अरु एकवीरा कालरात्रि दुरत्यया ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
ये नाम हैं चारतार्थ जो तब काम से होंगे सभी,
इन नाम कर्मों को पढ़े जो जानकर सुख भोगता ।
कहकर उसे श्री लक्ष्मि ने तब रूप अन्य किया निजी,
धारण तभी गुण सत्व से हा इन्दुसुप्रभ दिव्य था ।।

जपमाल अंकुश को लिये कर ग्रन्थ वीणा धारिणी,
वरवर्णिनी पैदा हुई, शुभ नाम लक्ष्मी ने दिये ।
विद्या महा वाणी महा, ब्राह्मी सरस्वति भारती,
वेदगर्भा धीश्वरी आर्या सुवाक् अरु कामदा ।।

कहने लगी लक्ष्मी महाकाली सरस्वति से तभी,
अनुरूप अपने युग्म को पैदा करो हे देवियो !
कह कर स्वयं सर्जित किया नर नारि का जोड़ा अहा,
दोनों हिरण्य सुगर्भ सुन्दर कमल आसन लीन थे ।।

ब्रह्मन् ! विधे ! हे धात ! हे वैरंचि उस नर को कहा,
पद्मे तथा कमले तथा लक्ष्मी कहा उस नारि को ।
श्री कालिका अरु भारती ने जो थे किये पैदा युगल,
तुम रूप और सुनाम भी उनके सुनो हे भूपते ।।

श्री कालिका ने रक्तभुज श्वेताँग नीलेकण्ठ के,
श्री चन्द्रशेखर नर तथा था गौर नारी को जना ।
रुद्र शंकर स्थाणु त्र्यम्बक अरु कपर्दी नर बना,
विद्या त्रयी भाषाक्षरा स्वर कामदा नारी बनी ।।

नर कृष्ण गौरी नार जो श्री शारदा ने थे जने,
शुभनाम उनके भी सुनो राजन् समाहित चित्त से ।
वसुदेवसुत श्री कृष्ण विष्णु ऋषिकेश जन अर्दन तथा,
गौरी उमा चण्डी सती श्री सुन्दरी सुभगा शिवा ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

इस भांति से वे युवतियां पुरुषत्व को प्रापित हुई,
हैं आंख वाले देखते अज्ञानिजन दुष्प्रेक्ष्य जो ।
पत्नी प्रदान विधातृ को, की लक्ष्मि ने विद्यात्रयी,
श्री रुद्र को गौरी तथा लक्ष्मी पुरुष श्रीकृष्ण को ।।

मिलकर गिरा से ब्रह्म ने ब्रह्माण्ड को धारण किया,
भेदन किया मिलकर उमा से रुद्र ने उस अण्ड का ।
कार्यजात प्रधान आदिक भूतात्म उस ब्रह्माण्ड से,
राजन् चराचर सब जगत उत्पन्न तत्क्षण हो गया ।।

पालन किया लक्ष्मी सहित श्री विष्णु ने संसार का,
संहार गौरी के सहित श्री रुद्र हैं करते सदा ।
राजन् महालक्ष्मी परा है सर्वसत्व महेश्वरी,
रूपा अरूपा है वही निज नाम नाना धारती ।।

सत् चित् परा मायादिकों से वर्णनीया सर्वदा,
नानाभिधान धरा वही है नेति नेति स्वरुपिणी ।।

प्राधानिक रहस्य समाप्त

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वैकृतिक रहस्य

ऋषि ने कहा तम आदि गुण से रूप जिसने हैं धरे,
त्रैगुण्यरूपा सात्विकी लक्ष्मी कहाती है वही ।
श्री चण्डिका दुर्गा वही भद्रा शिवा अरु भगवती,
हरि योगनिन्द्रा ख्यात है श्री तामसी काली महा ।।

मधु और कैटभ नाश को श्री ब्रह्म से जो प्रार्थिता,
दश भुज तथा मुख पाद हैं उस अंजनाभा कालि के ।
वह तीस लोचन मालिका से है सुशोभित सर्वथा,
चम चम चमकते दांत दाढ़ें भीमरूपा भी शिवा ।।

वह रूप कान्ति सुहाग सम्पद् आदि प्राप्ति स्थान है,
कर शंख चक्र गदा परिध अरु बाण चाप भुशुण्डिका ।
जिससे टपकता रक्त है वह मुण्ड शूल लिए हुए,
काली यही श्री विष्णु की है दुस्तरा माया महा ।।

आराधिता वश में करे जग को उपासक के सदा,
अमितप्रभा जिसका हुआ है जन्म सुरगण तेज से ।
त्रिगुणा महालक्ष्मी वही साक्षात् महिष की मर्दिनी,
श्वेतानना नीलीभुजा सुश्वेततर स्तन मण्डला ।।

रक्तमध्या रक्तपादा उरु नील जंघा उन्मदा,
चित्रजघना चित्रमाला लेपाम्बरादि विभूषिता ।
है कान्तिरूप सुहाग से जो सर्वदा ही शोभिता,
यद्यपि सहस्त्रभुजा सती अठ्ठारह पूजार्ह हैं ।।

क्रम से धरे हैं दाहिने निचले करों में शस्त्र ये,
अक्षमाला कमल मार्गण असि कुलिश एवं गदा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हैं चक्र शूल तथा परशु शुभ शंख घण्टा पाश भी,
शक्ति दण्ड सुचर्म कार्मुक शुचि पान पात्र कमण्डलू ।।

इन आयुधों से सज्जिता कमलासना लक्ष्मी महा,
सब सुरमयी परमेश्वरी की अर्चना जो नर करे ।
त्रैलोक्य अरु सुरवृन्द का स्वामित्व पाता सर्वथा,
गौरी शरीर समुद्भवा जो सत्वमात्र गुणाश्रया ।।

साक्षात् त्रयी विख्यात है वह शुम्भ दैत्यविनाशिनी,
भुज आठ घण्टा हल मुशल श्री शूल चक्र सुशोभिता ।
नृप बाण शंख सुचाप से जो सर्वदा ही सज्जिता,
सद्भक्ति पूर्वक पूजिता सर्वज्ञता देती वही ।।

देवी निशुम्भ प्रमाथिनी यह शुम्भ दैत्य विदारिणी,
राजन् तुम्हें मूर्तित्रयों के रूप हैं बतला दिये ।
मुझसे सुनो जगमातृका पूजाविधान पृथक् पृथक्.
लक्ष्मी यजन जब इष्ट हो तब दाहिने अरु बाम में ।।

श्री शारदा काली यजें अरु पृष्ठ में मिथुनत्रयी,
विधिभारती को मध्य में श्री रुद्र गौरी दाहिने ।
श्री विष्णु लक्ष्मी बाम में अरु सामने वेदत्रयी,
मध्यस्थ लक्ष्मी सामने भुज अष्टदश लक्ष्मी यजे ।।

काली दशास्या बाम में भुज अष्ट वाणी दाहिने,
भुज अष्ट दश की धारिणी यदि लक्ष्मि की पूजा करे ।
काली दशास्या की करे या अष्टभुज वाग् देवि की,
तो दाहिने श्री काल की अरु बाम में श्री मृत्यु की ।।

अच्छी तरह पूजा करे सारे अरिष्ट प्रशान्त हों,
भुज अष्टधारिणि पूज्य हो, यदि शुम्भ दैत्य विनाशिनी ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नव शक्तियां उनकी यजे तब रुद्र और गणेश को,
ब्रह्माणि ऐन्द्री शाम्भवी शिवदूतिका वाराहिका ।।
कौमारिका श्री नारसिंही वैष्णवी चामुण्डिका,
नवशक्तियां शास्त्रोक्त हैं ये पूजनीया सर्वदा ।
दिव्य देवीसूक्त से पूजा महालक्ष्मी प्रिया,
श्री सूक्त देवीसूक्त से ही ग्राह्य लक्ष्मी अर्चना ।।
अवतार त्रय की अर्चना में जो भी चरित के स्तोत्र हैं,
अरु मंत्र भी उनसे करे उन देवियों की अर्चना ।
भुज अष्टदश की धारिणी पूज्या महिष की मर्दिनी,
प्राधान्य से काली तथा श्री भारती भी है वही ।।
है ईश्वरी शुभपाप की वह सर्व लोक महेश्वरी,
महिषार्दिनी याजक सदा स्वामित्व पाता विश्व का ।
श्री भक्तवत्सल चण्डिका जगधात्रु की पूजा करे,
अर्घ्य अक्षत गन्ध भूषण, पुष्प धूप सुदीप से ।।
विविध व्यंजनभक्ष्ययुत नैवेद्य से सद्भक्ति से,
बलि रक्त सिंचित मांस से पूजा करे मदिरादि से ।
बलि मांस पूजा विप्रगण को वर्ज्य है हे भूपते,
उनके लिए मधु मांस पूजा शास्त्र में वर्णित नहीं ।।
जल आचमन चन्दन सुगन्धित और नम्र प्रणाम से,
कर्पूरयुत ताम्बूल से पूजा करे नर भक्ति से ।
बांये शिवा के सामने है छिन्न मस्तक दैत्य जो,
माहिष असुर उसको यजे दैवी परमपद प्राप्त वो ।।
दक्षिण दिशा में सामने धर्माधिपति श्री सिंह को,
जो दिव्य वाहन देवि का चर अरु अचर को धारता ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चरितत्रयों से चण्डि की कृत अंजली संस्तुति करे,
या मध्य से, अन्तिम प्रथम कैवल्य पाठ निषिद्ध है ।।
चरितार्ध पढ़ना वर्ज्य है, जप छिद्रता को प्राप्त हो,
करके प्रणाम प्रदक्षिणा पाठान्त में कृत अंजली ।
तब बार बार अतन्द्र हो मां से क्षमा याचन करे,
दे आहुती प्रतिश्लोक से घी तिल विमिश्रित खीर से ।।
या होम केवल स्तोत्र मंत्रों से ही करे श्री चण्डि के,
फिर नाम मंत्रोच्चार से स्थिरचित्त हो पूजा करे ।
करके प्रणाम कृताजंली, मन में बिठाकर ध्यान में,
तन्मय दशा में देर तक श्री चण्डिका चिन्तन करे ।।
प्रतिदिन मनुज जो इस तरह परमेश्वरी पूजन करे,
मन चाहते सुख भोग कर दैवी परम पद प्राप्त हो ।
जो भक्त वत्सल चण्डिका की नित्य पूजा नहिं करे,
कर भस्म उसके पुण्य को है क्षीण करती ईश्वरी ।।
उस सर्व लोक महेश्वरी श्री चण्डिका की भूपते !
पूजा करो शास्त्रोक्त विधि से सुख मिलेगा आपको ।।

वैकृतिक रहस्य सम्पूर्ण

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मूर्तिरहस्य

कहने लगे मुनि भूप से तब दिव्य मूर्तिरहस्य को,
जो जन्म लेगी विश्व में श्री नन्दजा नन्दाभिधा,
वह पूजिता अरु संस्तुता जग को करे वश में सदा,
उत्तम कनक सी कान्ति की सुप्रभ कनक अम्बरधरा ।।

आभा कनक के वर्ण की उत्तम कनक भूषण युता,
जो पाश अंकुश शंख से अरु पद्म से सज्जितभुजा ।
लक्ष्मी वही है इन्दिरा, कमलासना श्री सुन्दरी,
जिस रक्तदन्ता देवि का परिचय दिया निष्पाप है ।।

हूं रूप उसका कह रहा मैं सर्वभयहर वह सुनो,
रक्ताम्बरा वह रक्तवर्णा रक्त अंग विभूषणा ।
रक्त आयुध नेत्र अरु अतिरक्त केश विभीषणा,
रक्त तीक्ष्ण नखी तथा शुचि रक्तदन्ता सुन्दरी ।।

अनुरक्तपति नारी सरिस सेवा करे निज भक्त की
वसुधा विशाल सुमेरुसम पीन कुचद्वय धारिणी ।
दीर्घ लम्ब सुडौल जो अतिशय मनोहर दिव्य हैं,
अतिकान्त कर्कश वे अहा आनन्दपूर्ण पयोनिधी ।।

है वो पिलाती भक्त को सब कामदोहक चुच्चियां,
पात्र खड्ग मुशल तथा हल से चतुर्भुज सोहते ।
योगेश्वरी देवी यही श्री रक्तचण्डी ख्यात है,
चर अरु अचर जग है सभी हा व्याप्त इससे हो रहा ।।

जो भक्ति से इसको यजे वह भी चराचर व्याप्त हो,
काम्यभोग सुभोगकर श्री देवि सायुज प्राप्त हो ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नर जो वपुस्तव रक्तदन्ता चण्डिका का नित पढ़ें,
पति सेविका नारीसमा परिचारिका उसकी बने ।।

शाकम्भरी जो नीलवर्णा नील उत्पल लोचिनी,
निम्ननाभि त्रिरेखशोभित उदर अतिशय सूक्ष्म है ।
उत्तुंग वृत्त कठोर सम पीन घन स्तन सोहते,
वह बाणपूरित मुष्टिका कर में कमल कमलासना ।।

पुष्प पल्लव मूल फल अरु शाक संचय संयुता,
ईप्सित रसों से पूर्ण जो भय भूख तीस मिटा सकें ।
अतिशय चमकते चाप को धारती परमेश्वरी,
दुर्गा शताक्षी भी वही शाकम्भरी परिकीर्तिता ।।

शोकहीना दुष्टदमनी शमनी दुरित अरु आपदा,
गौरी उमा चण्डी सती श्रीकालिका वह पार्वती ।
स्तुति जप नमन अरु ध्यान से शाकम्भरी पूजन करे,
साधक अमृतमय अक्षय सुफल, अन्न पान अशन करे ।।

भीमा परा भी नीलवर्णा दाढ़ दांत समुज्वला,
लोचन विशाल वरांगना, अतिवृत्त पीन पयोधरा,
शिर पात्र डमरू को लिये चन्द्रहास विलासिनी,
एकवीरा कालरात्री है कामदा वह संस्तुता ।।

तेज मण्डल दुर्निरीक्ष्या अति चित्रवर्णा भ्रामरी,
शुचि चित्र लेपन सज्जिता चित्राभरण से भूषिता ।
चित्र भ्रमर सुपाणिनी मारी कही जाती वही,
इस भांति से श्री चण्डिका की मूर्तियां हैं सब कही ।।

सब कामधेनु समान ही मनकामना पूरी करें,
जो ये रहस्य कहे इन्हें कहना किसी से भी नहीं ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
आख्यान दिव्य विभूतियों का फल मनेच्छित दातृ है,
इससे प्रयत्न सहित सदा तुम जाप देवी का करो ॥

गत सात जन्मों के कलुष जो ब्रह्महत्या आदि हैं,
हैं दूर होते पाठ से सब कल्मषों से मुक्ति हो ।
है ध्यान देवी का कहा अति गुप्ततर यह भूपते,
नर यत्न पूर्वक यदि करे सब कामनायें पूर्ण हों ॥

इसकी कृपा से आप भी जगपूज्य होंगे भूपते !
है रूप देवी का जगत अरु चण्डिका है जगमयी,
उस विश्वरूपा ईश्वरी को मैं प्रणाम करूं सदा,
जो भक्तजन से संस्तुता देती अभीप्सित सिद्धि है ॥

श्री सूर्ति रहस्य समाप्त

———

क्षमा प्रार्थना

अपराध हजारों ही नित्य मैं करता रहूं ।
दास हूं जान के माता क्षमा दो परमेश्वरी ॥
आवाहन न जानूं मैं, न जानूं मैं विसर्जना ।
पूजाक्रिया न जानूं मैं, क्षमा दो परमेश्वरी ॥

बिना मंत्र क्रिया ही के बिना भक्ति सुरेश्वरी ।
पूजा जो मात की मैंने पूर्णता दीजिये उसे ॥
अपराधशतकर्ता भी जगदम्बा कहे यदी !
उसे प्राप्त गती जो हो ब्रह्मादिक अलभ्य वो ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सापराधी शरण में आया हूं जगदम्बिके !
कृपा का पात्र हूं माता, जो चाहो मां करो वही ।।

जो वर्ण पद मात्रायें भ्रष्ट हों मुझसे हुई ।
उन्हें क्षमा करो माता प्रसन्ना सर्वदा रहो ।।

कामेश्वरी जगन्माता सच्चिदानन्द रूपिणी ।
करो स्वीकार पूजा को कृपादृष्टि बनी रहे ।।
गुप्तातिगुप्त जो माता किया है जाप दास ने ।
उसे स्वीकारिये माता, सिद्धिदा सर्वदा बनो ।।

———

कामना

धर्मानन्द जमलोकी का किया अनुवाद ये,
राष्ट्रभाषा तथा चण्डी का प्रचार करे सदा ।।

पूर्ण हों लोक आशायें पाठ से इस स्तोत्र के ।
परा की सत्कृपा होवे दूर कष्टादि हों सभी ।।

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी । जय अम्बे गौरी ।।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ।। जय अम्बे गौरी ।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्तपुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजे ।। जय अम्बे गौरी ।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुरनर मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी । जय अम्बे गौरी ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती ।। जय अम्बे गौरी ।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुरघाती ।
धूम्रविलोचन नैना, निशदिन मदमाती ।। जय अम्बे गौरी ।।
चण्ड मुण्ड दोउ मारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ संहारे, सुर भयहीन करे ।। जय अम्बे गौरी ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे गौरी ।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजे डमरू ।। जथ अम्बे गौरी ।।
भुजा चार अति सोहत अभय सुवर धारी ।
मनबांच्छित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जय अम्बे गौरी ।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूरबाती ।
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ।। जय अम्बे गौरी ।।
अम्बा जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनबांच्छित फल पावे ।। जय अम्बे ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्षमापन स्तोत्र

न मंत्रों तंत्रो को नहिं जननि जानूं स्तवन मैं,
बुलाना जानूं ना स्तुतिकथन या ध्यान धरना ।
न मुद्रायें जानूं न हि करुण जानूं विलपना,
शरण्ये जानूं मैं दुखहरण तेरी शरण ही ।।

बिना जाने पूजाविधि अलस हो या धन बिना,
तुम्हारी पूजा में त्रुटि जननि जो भी कुछ रही,
क्षमा चाहूं माता सकल जग उद्धारिणि शिवे !
भले ही हो जावे कुसुत नहिं होती कुजननी ।।

धरा में तेरे हैं सुत सरल माता बहुत से,
उन्हीं में हूं मैं भी पर विरल तेरा सुत उमे !
नहीं मेरा तो भी तब उचित है त्याग जननी,
भले ही होजावे कुसुत न हि होती कुजननी ।।

जगन्माता तेरी न हि चरण सेवा कर सका,
न ही मैंने तेरे हित बहुत सा है धन दिया ।
मुझे माता तो भी निरुपम मिला स्नेह तुमसे,
भले ही हो जावे कुसुत न हि होती कुजननी ।।

सभी देवों को मैं विविध विधियों से भ्रमित हो,
शरण्ये ! तेरी ही शरण पड़के हूं तज चुका ।
बुढ़ापे में तेरी अब यदि कृपा है न मिलती,
निरालम्बी जाऊं कित शरण लम्बोदर जनी ।।

गिरा बोले मीठी मधुसरिस गूंगा श्वपच भी,
करोड़ों से खेले भयरहित हो रंक जन भी ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तुम्हारे कानों में स्तुति वचन का ही फल उमे !
नहीं जाने कोई जपनविधि तेरी जगत में ।

चिताभस्मालेपी विष असन है अम्बर दिशा,
जटाधारी जो है गलभुजगहारी पशुपती ।
कपाली भूतों का अधिपति कहावे जगपती,
भवानी तेरे ही कर गहन का है फल अहो ।।

न चाहूं मैं मुक्ती न हि विपुल मैं वैभव शिवे,
न विज्ञानी होना सुमुखि सुख वांच्छा न हि मुझे ।
यही चाहूं माता यह जनम बीते मम सदा,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी जपत ही ।।

नहीं पूजा की है विविध उपचारों युत कभी,
न रूखे वाक्यों से स्तुति जननि तेरी कर सका ।
कृपा तेरी तो भी मुझ सरिस दीनों पर रही,
अनाथों की भी तू जननि सुध लेती जगत में ।।

आपत्तियों में पड़के तुम्हें ही, दयार्णवे ! याद सदा करूं मैं ।
मां दुष्टता ये समझो न मेरी, भूखे पियासे जननी पुकारें ।।

जगदम्ब विचित्र नहीं कुछ भी, परिपूर्ण कृपा मुझपे यदि है ।
अपराध हजार करे सुत जो, न उपेक्षित तो भि करे जननी ।।

न मेरे सरिस पातकी है जगत में,
तुम्हारे सरिस है नहीं पाप हारी ।
यही जानके देवि अम्बे भवानी,
यथायोग्य जो हो करो मां उसे ही ।।

इति

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पुस्तक समीक्षा – समीक्षक : डॉ०ता०र० उपासनी

चन्डीस्तवन

श्री दुर्गासप्तसती का हिन्दी रूपान्तर

आचार्य धर्मानन्द जमलोकी एम० ए०, साहित्यरत्न द्वारा विरचित 'चन्डीस्तवन पुस्तक हस्तगत हुई ।

पाठकों को मूल सप्तसती का काव्यात्मक ज्ञान हो सके और संस्कृत में स्वयं पाठ न कर सकने वाले लोग भी इस चण्डी स्तोत्र से भगवती की आराधना कर सकें–इसी भावना से दुर्गा सप्तशती का रूपान्तर चण्डीस्तवन के नाम से किया गया है ।

वस्तुतः आचार्य जी ने अनुकरणीय निष्ठा और परिश्रम से मूल भावों को यथावत् अक्षुण्ण रख कर आराध्या इष्टदेवी जगदम्बा के चरित्र का राष्ट्रभाषा में गुणानुवाद करके एक स्तुत्य प्रयास किया है ।

कवच, अर्गला, कीलक, रात्रिसूक्त, तेरह अध्याय, देवी सूक्त, तीनों रहस्य, क्षमा प्रार्थना तथा क्षमापन स्तोत्र सभी का काव्यानुवाद सरल भाषा में मनोहारी एवं आकर्षक ढंग से किया गया है ।

भाव विभोर होकर जब साधक मां स्वरूप भगवती की गोद में सिर रखकर वात्सल्य भाव से बोलता है–"भले ही हो जावे कुसुत, न हि होती कुजननी ।।" तो सारा वातावरण आंसुओं से भीग जाता है ।

आचार्य धर्मानन्द जमलोकी का प्रयास जन–साधारण के लिये परम उपयोगी सिद्ध होगा ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

लेखक की अन्य रचनायें ——

१. मेघदूत (गढ़वाली) गीतिकाव्य

२. प्रणय पत्र पुष्पांजलि (हिन्दी मुक्तक काव्य)

३. महाकवि कालिदास गढ़वाली थे (शोधग्रन्थ)

अप्रकाशित

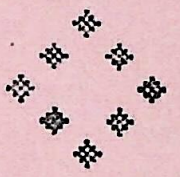

मिलने का पता :——

श्री व्रती बाबा मु०पो० कालीमठ जि० चमोली उ०प्र०

श्री आचार्य श्रीहर्ष जमलोकी मु०पो० उखीमठ जि० चमोली

बी० २ बी० ९५, जनक पुरी, नई दिल्ली-५८

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi